हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार, 17 मई 2026

तापमान
अधिकतम 41.5 डिग्री
न्यूनतम 24.2 डिग्री

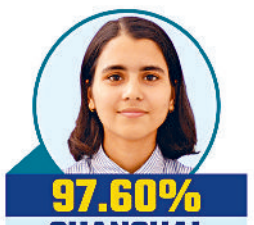

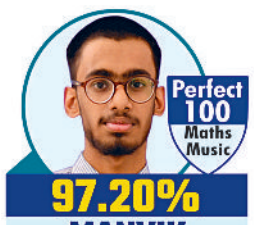

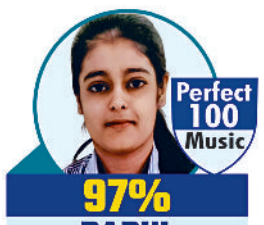

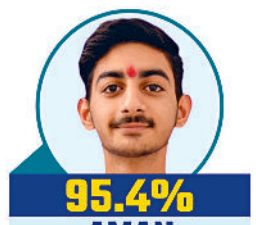

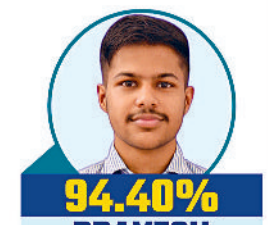

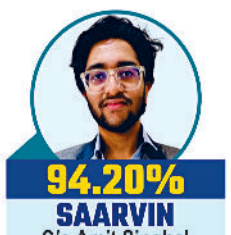

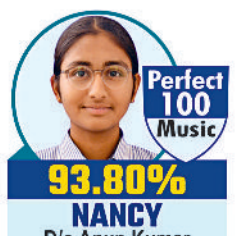

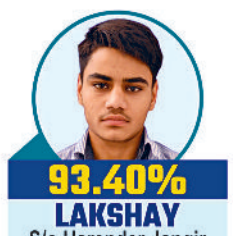

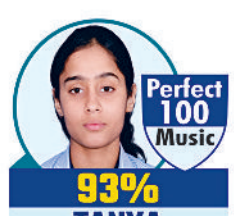

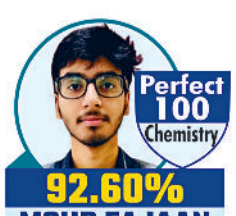

11 सचिवालय सहित शहर के पब्लिक टॉयलेट गंदगी से सरोबार दरवाजे व वॉशबेसिन तक टूटे

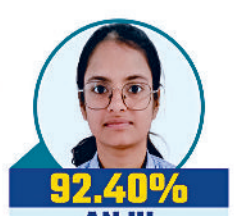

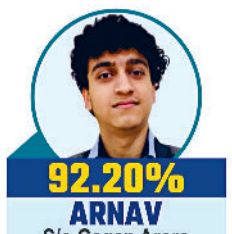

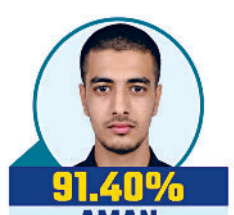

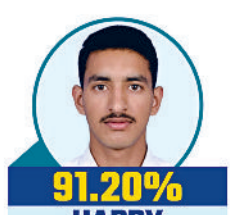

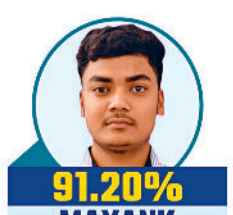

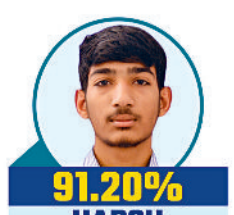

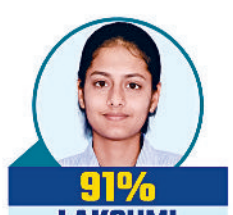

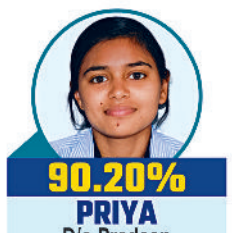

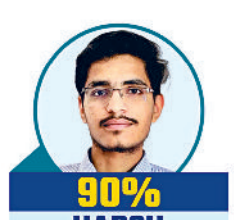

12 शनिदेव के जयकारों से गूंजे मंदिर, पूरे दिन चले धार्मिक अनुष्ठान, सुहागिनों ने मनाया वट सावित्री का पर्व

बिना काम किए हर महीने आएगी नियमित इनकम

एसआईपी के अलावा और भी हैं निवेश के बेहतर तरीके

बिना बिजनेस किए भी बन सकती है पैसिव इनकम

कम जोखिम में स्थिर आय चाहते हैं तो ये विकल्प खास

एफडी, बॉन्ड्स व आरईआईटीएस से हर माह हो सकती है कमाई

बाजार जोखिम के बावजूद निवेशकों में बढ़ा डिविडेंड स्टॉक्स का क्रेज

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

आज के समय में हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी कमाई का एक हिस्सा ऐसी जगह निवेश हो, जहां से भविष्य सुरक्षित होने के साथ-साथ नियमित मासिक आय भी मिलती रहे। बढ़ती महंगाई, नौकरी की अनिश्चितता और रिटायरमेंट की चिंता के बीच लोग अब केवल बचत नहीं, बल्कि स्मार्ट निवेश की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। आमतौर पर लोग एसआईपी यानी सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान को निवेश का सबसे लोकप्रिय तरीका मानते हैं, लेकिन इसके अलावा भी कई ऐसे विकल्प मौजूद हैं जो हर महीने नियमित कमाई देने में मदद कर सकते हैं। सही योजना और जोखिम क्षमता को ध्यान में रखकर निवेश किया जाए तो हर महीने अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है। ऐसे में जानिए एसआईपी के अलावा कई ऐसे स्मार्ट विकल्पों के बारे में, जो लंबे समय में संपत्ति बढ़ाने के साथ नियमित इनकम का मजबूत जरिया बन सकते हैं।

म्यूचुअल फंड एसडब्ल्यूपी

एसडब्ल्यूपी यानी सिस्टेमैटिक विदड्रॉल प्लान उन निवेशकों के लिए बेहतरीन विकल्प माना जाता है, जो अपने निवेश से हर महीने निश्चित रकम निकालना चाहते हैं। इसमें निवेशक पहले किसी म्यूचुअल फंड में एकमुश्त राशि निवेश करता है और फिर हर महीने तय रकम निकाल सकता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि बाकी बचा पैसा फंड में निवेशित रहता है और उस पर रिटर्न मिलता रहता है। हालांकि, इसमें बाजार जोखिम जुड़ा होता है, इसलिए निवेश से पहले फंड का प्रदर्शन और जोखिम स्तर समझना जरूरी है।

पोस्ट ऑफिस मंथली इनकम

जो लोग जोखिम से बचना चाहते हैं, उनके लिए पोस्ट ऑफिस की मंथली इनकम स्कीम काफी भरोसेमंद विकल्प है। यह केंद्र सरकार समर्थित योजना है, इसलिए इसमें जमा राशि सुरक्षित मानी जाती है। इस योजना में निवेश करने पर हर महीने निश्चित ब्याज सीधे खाते में जमा होता है। ग्रामीण और छोटे शहरों में आज भी बड़ी संख्या में लोग इसे सुरक्षित आय का साधन मानते हैं। इसमें एक निश्चित अवधि के लिए निवेश किया जाता है और ब्याज दर सरकार समय-समय पर तय करती है। यह योजना उन लोगों के लिए अधिक फायदेमंद है जो स्थिर और गारंटीड आय चाहते हैं।

डिविडेंड स्टॉक्स

शेयर बाजार में निवेश करने वाले लोगों के बीच डिविडेंड स्टॉक्स तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। डिविडेंड स्टॉक्स वे कंपनियां होती हैं जो अपने मुनाफे का एक हिस्सा नियमित रूप से शेयरधारकों को देती हैं। आमतौर पर मजबूत और स्थिर कंपनियां नियमित डिविडेंड देती हैं। ऐसे में निवेशकों को दोहरा फायदा मिलता है एक तरफ शेयर की कीमत बढ़ने की संभावना रहती है और दूसरी ओर नियमित डिविडेंड आय भी प्राप्त होती है। हालांकि, शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव बना रहता है। लंबी अवधि के निवेशकों के लिए यह अच्छा विकल्प साबित हो सकता है।

कॉर्पोरेट बॉन्ड्स

कॉर्पोरेट बॉन्ड्स उन निवेशकों के लिए अच्छा विकल्प माने जाते हैं जो बैंक एफडी से अधिक रिटर्न चाहते हैं। इसमें निवेशक किसी निजी कंपनी को निश्चित समय के लिए पैसा उधार देता है और बदले में कंपनी तय ब्याज का भुगतान करती है। अच्छी रेटिंग वाली कंपनियों के बॉन्ड अपेक्षाकृत सुरक्षित माने जाते हैं और इनमें बैंक एफडी की तुलना में अधिक ब्याज मिल सकता है। कई कंपनियां मासिक, तिमाही या वार्षिक आधार पर ब्याज भुगतान करती हैं।

सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम

सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम खासतौर पर बुजुर्गों के लिए तैयार की गई सुरक्षित निवेश योजना है। इसमें निवेश पर तिमाही आधार पर ब्याज मिलता है और ब्याज दर सामान्य बचत योजनाओं की तुलना में अधिक होती है। इस योजना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें सरकार की गारंटी रहती है, जिससे निवेश पूरी तरह सुरक्षित माना जाता है। साथ ही आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत टैक्स छूट का लाभ भी मिलता है।

रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स

आरईआईटीएस यानी रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स उन लोगों के लिए बेहतर विकल्प हैं जो बिना प्रॉपर्टी खरीदे रियल एस्टेट से कमाई करना चाहते हैं। इसमें निवेशक बड़े मॉल, ऑफिस स्पेस, कमर्शियल बिल्डिंग और अन्य प्रॉपर्टी प्रोजेक्ट्स में अप्रत्यक्ष रूप से निवेश करते हैं। इन प्रॉपर्टी से मिलने वाला किराया निवेशकों के बीच बांटा जाता है। इसका फायदा यह है कि कम राशि में भी रियल एस्टेट सेक्टर में निवेश संभव हो जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार, आरईआईटीएस लंबी अवधि में स्थिर आय और पूंजी वृद्धि दोनों का अवसर प्रदान करते हैं।

मासिक ब्याज एफडी

मासिक ब्याज एफडी उन लोगों के लिए अच्छा विकल्प है जो अपनी जमा पूंजी पर हर महीने निश्चित आय चाहते हैं। इसमें निवेशक बैंक या एनबीएफसी में फिक्स्ड डिपॉजिट कराते हैं और 'मंथली पेआउट' विकल्प चुनते हैं। इससे हर महीने ब्याज सीधे खाते में आता रहता है, जिसे पेंशन की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। वर्तमान समय में कई बैंक और वित्तीय संस्थान आकर्षक ब्याज दरें दे रहे हैं। यह विकल्प कम जोखिम वाले निवेशकों के लिए उपयुक्त माना जाता है। हालांकि, ब्याज दरें समय-समय पर बदलती रहती हैं, इसलिए निवेश से पहले विभिन्न बैंकों की दरों की तुलना करना जरूरी है। विशेषज्ञों का कहना है कि किसी भी निवेश विकल्प को चुनने से पहले अपनी आय, खर्च, जोखिम क्षमता और वित्तीय लक्ष्य को समझना जरूरी है।

एसआईपी की भीड़ में छुपा निवेश का सबसे 'स्मार्ट प्लान' एफएमपी

सुझाव
बिजनेस डेस्क

आज के दौर में निवेश की बात हो और एसआईपी का नाम न आए, ऐसा कम ही होता है। हर दूसरा निवेशक एसआईपी के जरिए लंबी अवधि में बड़ा फंड बनाने की बात करता है। लेकिन निवेश की दुनिया केवल शेयर बाजार और इक्विटी फंड्स तक सीमित नहीं है। ऐसे निवेशकों के लिए भी कई विकल्प मौजूद हैं, जो कम जोखिम के साथ स्थिर और अनुमानित रिटर्न चाहते हैं। इन्हीं विकल्पों में एक नाम है एफएमपी यानी फिक्स्ड मैच्योरिटी प्लान?। यह उन लोगों के लिए बेहतर विकल्प माना जाता है जो बैंक एफडी जैसी सुरक्षा चाहते हैं, लेकिन उससे थोड़ा ज्यादा रिटर्न और टैक्स में राहत भी पाना चाहते हैं। यही वजह है कि इसे "म्यूचुअल फंड वाली एफडी " भी कहा जाता है।

क्या होता है एफएमपी ?

एफएमपी यानी फिक्स्ड मैच्योरिटी प्लान एक क्लोज-एंडेड डेट म्यूचुअल फंड होता है। "क्लोज-एंडेड" का मतलब यह है कि इसमें निवेश केवल एक तय समय तक ही किया जा सकता है। जब स्कीम लॉन्च होती है, तभी निवेशक इसमें पैसा लगाते हैं। उसके बाद स्कीम बंद हो जाती है और नए निवेश की अनुमति नहीं रहती।
इसकी सबसे खास बात यह है कि इसकी मैच्योरिटी पहले से तय होती है। यानी फंड हाउस पहले ही बता देता है कि यह योजना 1 साल, 3 साल या 5 साल की होगी। निवेशक को उसी अवधि तक पैसा निवेशित रखना पड़ता है।

कहां निवेश होता है पैसा?

एफएमपी एक डेट फंड है। इसका मतलब है कि इसमें निवेशकों का पैसा शेयर बाजार में नहीं लगाया जाता, बल्कि सरकारी बॉन्ड्स, कॉरपोरेट

बॉन्ड्स, डिबेंचर्स और अन्य फिक्स्ड इनकम इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश किया जाता है। इन साधनों से निश्चित ब्याज मिलता है, इसलिए इसमें जोखिम इक्विटी फंड्स के मुकाबले काफी कम माना जाता है। यही कारण है कि बाजार में भारी गिरावट आने पर भी एफएमपी निवेशकों पर ज्यादा असर नहीं पड़ता।

कैसे काम करता है एफएमपी

एफएमपी का काम करने का तरीका काफी सरल है। मान लीजिए किसी स्कीम की अवधि 3 साल है, तो फंड मैनेजर उन्हीं बॉन्ड्स में निवेश करेगा जिनकी मैच्योरिटी भी लगभग 3 साल बाद हो। इससे फायदा यह होता है कि ब्याज दरों में बीच-बीच में आने वाले उतार-चढ़ाव का असर सीमित हो जाता है। निवेशक को पहले से अंदाजा रहता है कि मैच्योरिटी पर लगभग कितना रिटर्न मिल सकता है।

एफडी से कैसे अलग

अक्सर लोग एफएमपी की तुलना बैंक एफडी से करते हैं। दोनों में ही पैसा एक तय अवधि के लिए निवेश होता है और रिटर्न भी अपेक्षाकृत स्थिर रहता है। लेकिन एफएमपी की सबसे बड़ी ताकत टैक्स बचत मानी जाती है। बैंक एफडी पर मिलने वाले ब्याज पर निवेशक को अपनी टैक्स स्लैब के हिसाब से टैक्स देना पड़ता है। वहीं एफएमपी में लंबी अवधि के निवेश पर इंडेक्सेशन का लाभ मिल सकता है, जिससे टैक्स देनदारी कम हो जाती है। इंडेक्सेशन महंगाई को एडजस्ट करके निवेश की लागत बढ़ा देता है, जिससे टैक्स योग्य लाभ कम दिखता है। इसका फायदा यह होता है कि निवेशक के हाथ में एफडी के मुकाबले ज्यादा नेट रिटर्न बच सकता है।

बाजार की उथल-पुथल में राहत

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में रिटर्न बाजार की चाल पर निर्भर करता है। बाजार तेजी में हो तो मुनाफा अच्छा मिलता है, लेकिन गिरावट आने पर नुकसान भी हो सकता है। इसके विपरीत, एफएमपी में निवेश बॉन्ड्स और फिक्स्ड इनकम इंस्ट्रूमेंट्स में होता है। इसलिए शेयर बाजार में भारी गिरावट आने पर भी इसमें उतार-चढ़ाव सीमित रहता है।

एफएमपी के जोखिम भी समझना जरूरी

एफएमपी को अपेक्षाकृत सुरक्षित माना जाता है, लेकिन इसमें भी कुछ जोखिम मौजूद रहते हैं। सबसे बड़ा जोखिम इसकी कम लिक्विडिटी है। अगर निवेशक को बीच में पैसों की जरूरत पड़ जाए, तो वह एफडी की तरह आसानी से पैसा नहीं निकाल सकता। इसलिए इसमें वही पैसा लगाना चाहिए जिसकी जरूरत मैच्योरिटी से पहले न हो। दूसरा जोखिम क्रेडिट रिस्क का होता है। अगर जिस कंपनी के बॉन्ड में निवेश किया गया है, वह कंपनी भुगतान करने में असफल हो जाए, तो नुकसान हो सकता है।

क्या चुनें?

अगर कोई निवेशक हर महीने छोटी रकम निवेश करना चाहता है और लंबे समय तक जोखिम लेने को तैयार है, तो एसआईपी बेहतर विकल्प हो सकता है। लेकिन जिन लोगों के पास एकमुश्त राशि है जैसे बोनस, रिटायरमेंट फंड या बचत और वे उसे 1 से 3 साल के लिए सुरक्षित रखना चाहते हैं, उनके लिए एफएमपी बेहतर साबित हो सकता है।

समझदारी से लें फैसला

निवेश का सही विकल्प हमेशा व्यक्ति की जरूरत, जोखिम उठाने की क्षमता और निवेश अवधि पर निर्भर करता है। एफएमपी उन निवेशकों के लिए अच्छा विकल्प है जो स्थिरता, अनुमानित रिटर्न और टैक्स में राहत चाहते हैं।एसआईपी और इक्विटी फंड्स जहां लंबी अवधि में अधिक रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं, वहीं एफएमपी पोर्टफोलियो में संतुलन और सुरक्षा देने का काम करता है। इसलिए निवेश करते समय केवल भीड़ का हिस्सा बनने के बजाय जरूरतों के हिसाब से फैसला लेना ज्यादा जरूरी है।

अर्थव्यवस्था मजबूत बनाने वाले विकल्पों में करें निवेश

पीएम मोदी की अपील के बाद बदल रही निवेश की सोच

बचत मंत्र
बिजनेस डेस्क

भारत में सोने को हमेशा सुरक्षित निवेश और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक माना गया है। शादी-ब्याह से लेकर बचत तक, हर घर में सोना एक अहम हिस्सा रहा है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कई मंचों से यह अपील की है कि लोग भौतिक सोने की खरीद कम करें और ऐसे निवेश विकल्प अपनाएं जो देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती दें। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर निवेशक सोने में पैसा फंसाने के बजाय भारतीय कंपनियों, सरकारी योजनाओं और उत्पादक क्षेत्रों में निवेश करते हैं, तो इससे न केवल उन्हें बेहतर रिटर्न मिल सकता है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी फायदा होगा। ऐसे में अगर निवेशक वैकल्पिक साधनों की ओर बढ़ते हैं, तो इससे विदेशी मुद्रा बचाने और घरेलू निवेश को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

इक्विटी म्यूचुअल फंडः छोटी रकम से बड़ी भागीदारी

आज के समय में इक्विटी म्यूचुअल फंड निवेश का सबसे लोकप्रिय विकल्प बन चुके हैं। इसमें निवेशकों का पैसा भारतीय कंपनियों के शेयरों में लगाया जाता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक केवल 500 महीने की एसआईपी से भी शुरुआत कर सकते हैं। लंबे समय में इक्विटी फंड महंगाई को मात देने और बेहतर रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि जब लोग इक्विटी फंड में निवेश करते हैं, तो उनका पैसा सीधे भारतीय उद्योगों और कारोबार को मजबूत करने में लगता है।

एसजीबी : सोने जैसा भरोसा, बिना स्टोरेज की चिंता

जो लोग सोने में निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड यानी एसजीबी बेहतर विकल्प माना जाता है। यह भारत सरकार द्वारा जारी किया जाता है और इसमें निवेशक को सोने की कीमत बढ़ने का फायदा भी मिलता है। सबसे खास बात यह है कि इसमें भौतिक सोना खरीदने जैसी चोरी, शुद्धता और स्टोरेज की चिंता नहीं रहती। इसके अलावा निवेशक को तय ब्याज भी मिलता है। व

रियल एस्टेटः लंबी अवधि का मजबूत विकल्प

रियल एस्टेट हमेशा से भारतीय निवेशकों की पसंद रहा है। खासतौर पर ऐसे क्षेत्रों में जहां सड़क, मेट्रो, इंडस्ट्रियल कॉरिडोर या नई इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाएं विकसित हो रही हों, वहां जमीन और संपत्ति के दाम तेजी से बढ़ सकते हैं। हालांकि रियल एस्टेट में निवेश के लिए बड़ी पूंजी की जरूरत होती है, लेकिन लंबी अवधि में यह अच्छा रिटर्न और संपत्ति निर्माण का माध्यम बन सकता है।

पीपीएफ और एनएससी : सुरक्षित निवेश का विकल्प

जो निवेशक जोखिम नहीं लेना चाहते, उनके लिए सरकार समर्थित बचत योजनाएं बेहतर विकल्प मानी जाती हैं।पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) और नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट (एनएससी) जैसी योजनाएं सुरक्षित और स्थिर रिटर्न देती हैं। पीपीएफ में लंबी अवधि का टैक्स-फ्री रिटर्न मिलता है, जबकि एनएससी निश्चित ब्याज के साथ सुरक्षित निवेश का विकल्प देता है।

कॉरपोरेट एफडी : बैंक एफडी से ज्यादा रिटर्न

कई निवेशक बैंक एफडीसे बेहतर रिटर्न के लिए कंपनी फिक्स्ड डिपॉजिट यानी कॉरपोरेट एफडी की ओर भी रुख कर रहे हैं। कॉरपोरेट एफडी में ब्याज दरें सामान्य बैंक एफडी से अधिक हो सकती हैं।

गोल्ड ईटीएफ और ईजीआर भी बन रहे विकल्प

विशेषज्ञों का कहना है कि अगर कोई निवेशक सोने में निवेश करना ही चाहता है, तो फिजिकल गोल्ड खरीदने के बजाय गोल्ड ईटीएफ या इलेक्ट्रोनिक गोल्ड रिसिप्ट (ईजीआर) जैसे विकल्प बेहतर हो सकते हैं।इससे गोल्ड इम्पोर्ट पर दबाव कम करने में मदद मिलती है।

संतुलित पोर्टफोलियो जरूरी

वित्तीय विशेषज्ञ हमेशा संतुलित निवेश रणनीति अपनाने की सलाह देते हैं। केवल एक ही साधन में पैसा लगाने के बजाय निवेश को इक्विटी, गोल्ड, डेट और सुरक्षित योजनाओं के बीच बांटना बेहतर माना जाता है। इससे जोखिम कम होता है और अलग-अलग बाजार परिस्थितियों में पोर्टफोलियो स्थिर बना रहता है।

डायरेक्ट फंड्स चुनें या रेगुलर?

म्यूचुअल फंड में सही तरीके से ही लें निवेश का फैसला

सावधानी
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले ज्यादातर लोगों के सामने एक सवाल जरूर आता है—डायरेक्ट फंड चुनें या रेगुलर फंड पहली नजर में दोनों लगभग एक जैसे दिखाई देते हैं। एक ही फंड मैनेजर, एक जैसी निवेश रणनीति और एक जैसा पोर्टफोलियो। लेकिन इन दोनों के बीच का छोटा-सा फर्क लंबे समय में आपकी कमाई पर बड़ा असर डाल सकता है। निवेश शुरू करने से पहले यह समझना जरूरी है कि आखिर डायरेक्ट और रेगुलर फंड में अंतर क्या है और आपके लिए कौन-सा विकल्प ज्यादा बेहतर हो सकता है।

क्या होता है डायरेक्ट और रेगुलर फंड?

डायरेक्ट फंड वह होता है जिसमें निवेशक सीधे म्यूचुअल फंड कंपनी के जरिए निवेश करता है। इसमें कोई एजेंट, डिस्ट्रीब्यूटर या बिचौलिया शामिल नहीं होता। वहीं रेगुलर फंड में निवेश किसी एडवाइजर, बैंक, एजेंट या डिस्ट्रीब्यूटर के माध्यम से किया जाता है। इसके बदले फंड हाउस उन्हें कमीशन देता है, जिसकी लागत निवेशक से वसूली जाती है। यही वजह है कि दोनों फंड्स के रिटर्न में अंतर देखने को मिलता है।

एक्सपेंस रेशियो का खेल समझिए

डायरेक्ट फंड का सबसे बड़ा फायदा इसका कम एक्सपेंस रेशियो होता है। क्योंकि इसमें किसी डिस्ट्रीब्यूटर को कमीशन नहीं दिया जाता, इसलिए निवेशक की लागत कम रहती है। दूसरी तरफ रेगुलर फंड में कमीशन जुड़ने से एक्सपेंस रेशियो थोड़ा ज्यादा हो जाता है। देखने में यह अंतर छोटा लग सकता है, लेकिन लंबे समय में यह आपकी कुल कमाई पर बड़ा असर डालता है। उदाहरण के तौर पर, अगर दो फंड एक जैसा रिटर्न दे रहे हों और उनमें केवल 1% लागत का फर्क हो, तो 10-15 साल में यह अंतर लाखों रुपये तक पहुंच सकता है। डायरेक्ट फंड में रिटर्न ज्यादा क्यों दिखता है?
डायरेक्ट फंड में रिटर्न ज्यादा होने का कारण कोई अलग निवेश रणनीति नहीं है। असल वजह यह है कि इसमें फीस कम कटती है। कम लागत का सीधा फायदा निवेशक को मिलता है और लंबी अवधि में कंपाउंडिंग के जरिए यह अंतर और बढ़ जाता है। यही कारण है कि जो निवेशक खुद रिसर्च कर सकते हैं और बाजार को समझते हैं, वे अक्सर डायरेक्ट फंड को प्राथमिकता देते हैं।

फिर लोग रेगुलर फंड क्यों चुनते हैं?

अगर डायरेक्ट फंड सस्ते और ज्यादा रिटर्न देने वाले हैं, तो सवाल उठता है कि लोग रेगुलर फंड क्यों चुनते हैं?
असल में रेगुलर फंड केवल निवेश नहीं, बल्कि गाइडेंस भी देते हैं। एक अच्छा वित्तीय सलाहकार निवेशक की आय, लक्ष्य, जोखिम क्षमता और जरूरतों के हिसाब से सही फंड चुनने में मदद करता है। इसके अलावा बाजार में गिरावट आने पर कई निवेशक घबरा जाते हैं और गलत समय पर पैसा निकाल लेते हैं। ऐसे समय में एडवाइजर निवेशक को शांत रखने और सही रणनीति पर टिके रहने में मदद करता है। यानी रेगुलर फंड की अतिरिक्त लागत केवल कमीशन नहीं, बल्कि सलाह और सपोर्ट की फीस भी होती है।

आपके लिए कौन-सा विकल्प सही?

अगर आप निवेश की बेसिक समझ रखते हैं, खुद रिसर्च कर सकते हैं और बाजार के उतार-चढ़ाव में भावनात्मक फैसले नहीं लेते, तो डायरेक्ट फंड आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकते हैं। लेकिन अगर आप नए निवेशक हैं, फंड चुनने में कन्फ्यूज रहते हैं या बाजार गिरने पर घबरा जाते हैं, तो रेगुलर फंड ज्यादा सुरक्षित विकल्प साबित हो सकते हैं। कई बार गलत फैसले जैसे बाजार गिरते ही निवेश रोक देना या बार-बार फंड बदलना निवेशक को उस फीस से कहीं ज्यादा नुकसान पहुंचा देते हैं जो वह रेगुलर फंड में देता है। म्यूचुअल फंड में सफलता केवल सही फंड चुनने से नहीं मिलती, बल्कि सही व्यवहार भी उतना ही जरूरी होता है। हाल में सबसे ज्यादा रिटर्न देने वाले फंड के पीछे भागना। बाजार गिरते ही निवेश रोक देना। बार-बार पोर्टफोलियो बदलना। छोटी अवधि में बड़े रिटर्न की उम्मीद करना। ये गलतियां निवेश की पूरी रणनीति खराब कर सकती हैं।

लंबी अवधि में अनुशासन ही असली फायदा

डायरेक्ट फंड हो या रेगुलर, दोनों में सबसे ज्यादा जरूरी है अनुशासन और धैर्य। अगर निवेशक लंबे समय तक लगातार निवेश बनाए रखता है, तो कंपाउंडिंग का फायदा धीरे-धीरे बड़ा फंड तैयार करता है। इसलिए निवेश का फैसला केवल कम फीस या ज्यादा रिटर्न देखकर नहीं, बल्कि अपनी समझ, अनुभव और व्यवहार को ध्यान में रखकर लेना चाहिए।

समझदारी से चुनें निवेश का रास्ता

डायरेक्ट और रेगुलर फंड दोनों के अपने फायदे हैं। डायरेक्ट फंड कम लागत और ज्यादा संभावित रिटर्न देते हैं, जबकि रेगुलर फंड सलाह और निवेश अनुशासन बनाए रखने में मदद करते हैं। आखिर में सही विकल्प वही है जो आपकी जरूरत, निवेश ज्ञान और मानसिक आराम के हिसाब से फिट बैठे। क्योंकि सफल निवेश केवल सही फंड चुनने से नहीं, बल्कि लंबे समय तक सही रणनीति पर टिके रहने से बनता है।

सही रणनीति, अनुशासन और धैर्य के साथ करें निवेश

एसआईपी के बेस्ट टिप्स, लंबे समय में बना देंगे बड़ा फंड

- समय पर शुरू की गई एसआईपी देती है बड़ा फायदा
- लंबी अवधि का निवेश ही दिलाता है असली रिटर्न

तैयारी
बिजनेस डेस्क

आज के दौर में हर व्यक्ति चाहता है कि उसका भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित हो। बेहतर घर, बच्चों की पढ़ाई, रिटायरमेंट के बाद आरामदायक जीवन और अचानक आने वाली जरूरतों के लिए बड़ा फंड तैयार करना अब लोगों की प्राथमिकता बन चुका है, लेकिन जब निवेश की बात आती है तो अधिकतर लोग शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव से डर जाते हैं। ऐसे में म्यूचुअल फंड की एसआईपी यानी सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान एक आसान और भरोसेमंद विकल्प बनकर सामने आती है। एसआईपी केवल हर महीने कुछ रुपये जमा करने का तरीका नहीं है, बल्कि यह एक अनुशासित निवेश रणनीति है। छोटी रकम से शुरू होकर यह लंबे समय में बड़ा फंड तैयार करने की क्षमता रखती है। वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि सही प्लानिंग और धैर्य के साथ एसआईपी करोड़ों रुपये का कॉर्पस तैयार कर सकती है।

अनुशासन जरूरी

कई लोग बाजार गिरने पर घबराकर अपनी एसआईपी बंद कर देते हैं, जबकि यही सबसे बड़ी गलती होती है। एसआईपी का असली फायदा तभी मिलता है जब निवेशक लगातार निवेश करता रहे। बाजार में गिरावट आने पर कम कीमत पर ज्यादा यूनिट्स खरीदने का मौका मिलता है। इसे रुपी कॉस्ट एवरेजिंग (आरसीए)कहा जाता है। लंबे समय में यही रणनीति औसत लागत को कम करती है और बेहतर रिटर्न देने में मदद करती है। इसलिए बाजार की हलचल देखकर निवेश रोकने के बजाय अनुशासन बनाए रखना जरूरी है।

लंबी अवधि का नजरिया रखें

एसआईपी उन लोगों के लिए नहीं है जो एक-दो साल में पैसा दोगुना करना चाहते हैं। म्यूचुअल फंड में असली संपत्ति लंबे समय में बनती है। विशेषज्ञ कम से कम 5 से 10 साल का नजरिया रखने की सलाह देते हैं।

शुरुआती वर्षों में निवेश की रफ्तार सामान्य लग सकती है, लेकिन जैसे-जैसे समय बढ़ता है, कंपाउंडिंग का असर तेजी से दिखाई देने लगता है। कई निवेशकों का अनुभव है कि 10-15 साल तक नियमित एसआईपी करने पर बड़ा फंड तैयार किया जा सकता है।

लक्ष्य तय करके करें निवेश

बिना लक्ष्य के निवेश करना अक्सर भ्रम पैदा करता है। इसलिए एसआईपी शुरू करने से पहले यह तय करना जरूरी है कि निवेश किस उद्देश्य के लिए किया जा रहा है। जैसे घर खरीदना, बच्चों की उच्च शिक्षा, शादी, रिटायरमेंट या इमरजेंसी फंड। जब निवेश किसी खास लक्ष्य से जुड़ा होता है तो बाजार की गिरावट में भी निवेशक भावनात्मक रूप से मजबूत बना रहता है।

जोखिम क्षमता को समझें

हर निवेशक की आर्थिक स्थिति और जोखिम लेने की क्षमता अलग होती है। इसलिए दूसरों को देखकर निवेश करना नुकसानदायक हो सकता है। यदि कोई निवेशक ज्यादा जोखिम नहीं लेना चाहता तो उसे लार्ज कैप या इंडेक्स फंड से शुरुआत करनी चाहिए। वहीं, लंबे समय तक निवेश करने वाले और ज्यादा जोखिम लेने वाले निवेशक मिड कैप या स्मॉल कैप फंड का विकल्प चुन सकते हैं। सही फंड का चयन उम्र, आय और वित्तीय जरूरतों को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

ज्यादा रिटर्न देख फंड न चुनें

कई लोग पिछले एक साल का शानदार रिटर्न देखकर किसी फंड में निवेश कर देते हैं, जबकि यह तरीका सही नहीं माना जाता। फंड चुनते समय उसके पिछले 5 से 10 साल के प्रदर्शन को देखना जरूरी है। यह भी देखना चाहिए कि बाजार गिरने पर फंड का प्रदर्शन कैसा रहा, फंड मैनेजर का अनुभव कितना है और फंड लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहा है या नहीं। जैसे-जैसे आय बढ़ती है, निवेश की रकम भी बढ़ानी चाहिए। इसे स्टेपअप एसआईपी कहा जाता है। यदि कोई व्यक्ति हर साल अपनी एसआईपी में 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी करता है तो लंबे समय में उसका फंड कई गुना तेजी से बढ़ सकता है। उदाहरण के तौर पर 5 हजार रुपये मासिक एसआईपी शुरू करने वाला निवेशक यदि हर साल इसमें थोड़ी वृद्धि करता रहे, तो भविष्य में करोड़ों रुपये का कॉर्पस तैयार करना आसान हो सकता है।

बाजार की गिरावट को समझें

जब बाजार में भारी गिरावट आती है तो अधिकतर निवेशक डर जाते हैं, लेकिन अनुभवी निवेशक इसे अवसर मानते हैं। गिरावट के दौरान कम कीमत पर खरीदी गई यूनिट्स भविष्य में ज्यादा रिटर्न देने की संभावना रखती हैं। इसीलिए बाजार में उतार-चढ़ाव को लेकर घबराने के बजाय निवेशकों को अपनी रणनीति पर टिके रहना चाहिए। एसआईपी की सबसे बड़ी ताकत यही है कि यह बाजार के अलग-अलग स्तरों पर निवेश जारी रखती है।

धैर्य ही सबसे बड़ी पूंजी

शेयर बाजार में सफलता केवल ज्ञान से नहीं, बल्कि धैर्य से भी मिलती है। बाजार में उतार-चढ़ाव सामान्य बात है। जो निवेशक हर गिरावट में घबराकर फैसले बदलता है, उसे नुकसान उठाना पड़ सकता है। वहीं, जो निवेशक लंबे समय तक अपनी रणनीति पर कायम रहता है, वही अंत में बड़ा लाभ कमाने में सफल होता है। एसआईपी में धैर्य रखने वाले निवेशकों को ही कंपाउंडिंग का असली फायदा मिलता है।

खबर संक्षेप

रेवाड़ी। शनिदेव के भंडारे में प्रसाद ग्रहण करते श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

जागरण में शनिदेव की महिमा का हुआ गुणगान

कोसली। कोसली में शनि जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित जागरण में श्रद्धालुओं ने श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ शनि महाराज की महिमा का गुणगान किया। जागरण में भजन गायक ज्योति सुखीजा, राकेश दहिया, मोहित भारद्वाज जागरण पार्टी एवं आर्ट ग्रुप ने सुंदर भजनों की प्रस्तुति दी। जागरण के दौरान भगवान श्रीकृष्ण एवं सुदामा की मनमोहक झांकी ने श्रद्धालुओं को भाव-विभोर किया। श्रद्धालुओं ने शनि महाराज से सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। जागरण के बाद भंडारे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सुमेर सिंह, होशियार नंबरदार, बिट्टू, कमल, रिंकु कोसलिया, प्रमोद, हरिओम, अमन सेठ व घीरज सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

चेक बाउंस के मामले में फरार पीओ गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस के पीओ स्टाफ ने अदालत की ओर से उद्घोषित अपराधी दिनेश कुमार निवासी गांव खोरी को गिरफ्तार किया गया। पीओ स्टाफ से एसआई लाल चंद ने बताया कि आरोपी दिनेश कुमार काफी दिनों से चेक बाउंस के मामले में अदालत में पेश नहीं हो रहा था। इसके बाद अदालत ने उसे पीओ घोषित कर दिया था। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ थाना मॉडल टाउन में अलग से अभियोग भी दर्ज किया था। मामले में पुलिस के पीओ स्टाफ ने शुक्रवार को आरोपी दिनेश कुमार को गिरफ्तार कर लिया गया है।

कोर्ट परिसर में स्पेशल लोक अदालत 30 को

रेवाड़ी। आगामी 30 मई को जिला न्यायालय रेवाड़ी, सब-डिवीजन कोसली तथा बावल में स्पेशल लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी कम सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण डा. रेनू सोलखे ने बताया की स्पेशल लोक अदालत में चेक बाउंस के केस समझौते के लिए रखे जाएंगे। सीजेएम डा. सोलखे ने आमजन से अपील करते हुए कहा कि वे ज्यादा से ज्यादा संख्या में अपने चेक बाउंस के केस स्पेशल लोक अदालत में सुलझाएं।

सीजेएम डा. रेनु सोलखे

गौरव ने शूटिंग चैंपियनशिप में किया शानदार प्रदर्शन

रेवाड़ी। विवेकानंद स्कूल लाखनौर के छात्र गौरव ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए स्कूल और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। गौरव ने दिल्ली करनी सिंह शूटिंग रेंज में आयोजित 24वीं कुमार सुरेंद्र सिंह शूटिंग चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन किया है। गौरव ने 10 मीटर एयर पिस्टल सब-जूनियर वर्ग की कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच 600 में से 540 का बेहतरीन स्कोर किया। स्कूल के प्रबंधक एडवोकेट सुधीर यादव ने कहा कि यह शानदार प्रदर्शन गौरव की कड़ी मेहनत, लगन और कोच के मार्गदर्शन का परिणाम है। स्कूल प्रबंधन ने गौरव के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उम्मीद जताई कि वह आगामी राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी देश का नाम रोशन करेगा।

छात्र गौरव।

सफाई व मेंटेनेस नहीं होने से पब्लिक टॉयलेट्स का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे नागरिक, टेंडर होने पर भी नहीं ली जा रही सुध

सचिवालय सहित शहर के पब्लिक टॉयलेट गंदगी से सरोबार दरवाजे व वॉशबेसिन तक टूटे, पानी की भी नहीं व्यवस्था

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

सफाई और मेंटेनेस के टेंडर होने के बाद भी शहर के सार्वजनिक शौचालय जर्जर अवस्था के साथ गंदगी से सरोबार है। यहां तक कि सचिवालय के पब्लिक टॉयलेट में भी साफ-सफाई नहीं की जा रही है। नागरिक व्यवस्था से महरूम व गंदगी युक्त पब्लिक टॉयलेट का इस्तेमाल करने से भी कतरा रहे है कि कहीं गंदगी से सरोबार टॉयलेट के संक्रमण से बीमार न हो जाएं। नगर परिषद के ओर से सार्वजनिक शौचालयों की बाहरी दीवार पर नागरिकों की सुविधा के लिए समय, शिकायत नंबर सहित अन्य जानकारी लिखवा दी गई है, लेकिन इसमें न तो केयर टेकर का नंबर है और शिकायत के लिए लिखे गए नंबर पर कॉल करने पर कोई एक्शन तक नहीं लिया जा रहा है। पब्लिक टॉयलेट्स में सीट, पानी की टंकी, वॉशबेसिन व दरवाजे तक टूटे हुए है। शहर के ज्यादातर पब्लिक टॉयलेट सुधार होने का इंतजार कर रहे है। संयुक्त रूप से बने महिला व पुरुषों के दोनों पब्लिक टॉयलेट की हालत दयनीय हो चुकी है। शौचालयों के मेंटेनेस के लिए जनवरी माह में करीब 28.27 लाख रुपये का एक वर्ष के लिए टेंडर किया गया था, लेकिन टेंडर होने के बाद से अभी तक शौचालयों की सुध नहीं ली गई है। सार्वजनिक शौचालयों में पानी तक की व्यवस्था नहीं है।

हरिभूमि सरोकार

रेवाड़ी। नेहरू पार्क के पास पब्लिक टॉयलेट की जर्जर हालत, दीवार पर लिखी गई सूचना। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। सचिवालय स्थित पब्लिक टॉयलेट में गंदगी का आलम।

कई शौचालय जर्जर हालत में आ चुके

11 यूरिनल बने हुए है। नगर परिषद की ओर से शौचालयों के रखरखाव व सफाई के नाम पर प्रति वर्ष लाखों रुपये खर्च किए जाते हैं। नेहरू पार्क के बाहर, गोकल गेट, नाईवाली चौक, सती कॉलोनी, रेलवे रोड, अनाजमंडी के पास, ऑटो मार्केट, बारा हजारी, गर्ल्स स्कूल के पास व रेलवे रोड सहित ज्यादातर सार्वजनिक शौचालयों में गंदगी का आलम छाया हुआ है। इनमें से कई शौचालय जर्जर हालत में आ चुके है।

शिकायत करने पर भी कोई एक्शन नहीं

शहर के नेहरू पार्क में रोजना सैकड़ों की संख्या में नागरिक आते है। शनिवार को जब पार्क में आए नागरिक धर्मेन्द्र ने शौचालय पर लिखे शिकायत नंबर पर कॉल करके टॉयलेट की दयनीय स्थिति से अवगत करवाया तो कोई संतुष्टि भरा जवाब नहीं मिला। कॉल रिसीव करने वाले कर्मचारी ने मौके पर पहुंचने की बात कही, लेकिन काफी देर तक वहां कोई नहीं पहुंचा। इस पर व्यक्ति को निराश होकर लौटना पड़ा। व्यक्ति ने कहा कि नगर परिषद की ओर से लोगों की सुविधा पर ध्यान तक नहीं दिया जा रहा है। जब समाधान ही नहीं करना तो शौखलय पर शिकायत नंबर लिखने का क्या मतलब है। पब्लिक टॉयलेट की स्थिति दयनीय हो चुकी है। दरवाजे टूटे हुए है, यहां तक कि टॉयलेट में पानी तक की व्यवस्था नहीं है।

रेवाड़ी। सती कॉलोनी के पब्लिक टॉयलेट में गंदगी का आलम। फोटो : हरिभूमि

इंटरनेशनल ताइक्वांडो चैंपियनशिप में विजेता ज्योति का हुआ सम्मान

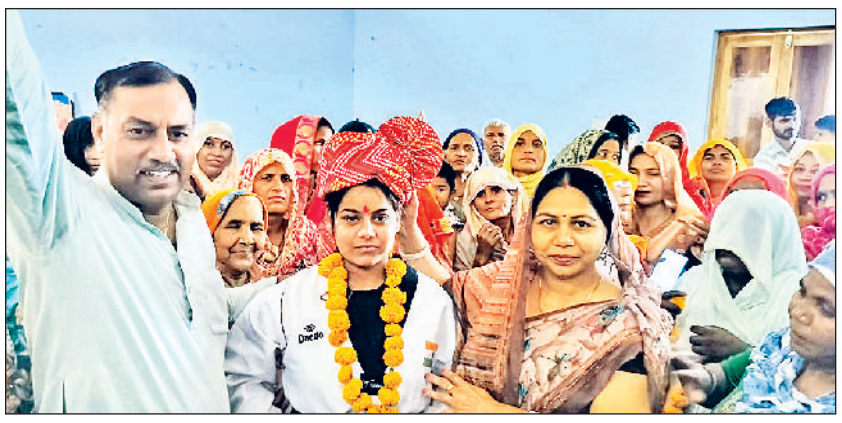

रेवाड़ी। गांव में ज्योति का सम्मान करते हुए। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

13वीं स्पीड पावर इंटरनेशनल ओपन ताइक्वांडो चैंपियनशिप में जिले की बेटी ज्योति ने शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक जीतकर क्षेत्र का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया है। गांव बीकानेर निवासी बाबूराम रेवारिया की पुत्री ज्योति ने प्रतियोगिता में बेहतरीन खेल कौशल का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में 18 देशों के लगभग 1200 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

- रजत पदक जीतकर क्षेत्र का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया
- ज्योति का ढोल-नगाड़ों फूल-मालाओं से भव्य स्वागत किया

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने के बाद गांव पहुंचने पर ज्योति का ढोल-नगाड़ों, फूल-मालाओं से भव्य स्वागत किया गया। ज्योति ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता, गुरुजनों एवं कोच को देते हुए कहा कि निरंतर मेहनत, अनुशासन और परिवार के सहयोग से यह मुकाम हासिल हुआ है।

मौके पर ये मौजूद रहे

इस अवसर पर जिला पार्षद सरोज मेहरा, समाजसेवी धनीराम मेहरा, सरपंच टहना दीपालपुर, सरपंच मस्तापुर, कैप्टन फकीर चंद, बलराज, हरचंद मेहरा, धर्मी, टालमी, सतबीर, प्रभु नंबरदार, गोविंद, हरीश, रमन व सचिन सहित अनेक ग्रामीण उपस्थित थे।

न्यूनतम वेतन लागू न होने से ग्रामीण जलकर्मियों में रोष, प्रदर्शन की चेतावनी

रेवाड़ी। ग्रामीण जलकर्मी संघ हरियाणा की प्रदेश कार्यकारिणी ने राज्य सरकार की ओर से न्यूनतम वेतन रिवाइज करने के फैसले पर मुख्यमंत्री और श्रम मंत्री का आभार जताया है, लेकिन साथ ही अब तक इसका लाभ न मिलने पर नाराजगी भी व्यक्त की है। संघ ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही बढ़ा हुआ वेतन लागू नहीं किया गया, तो पूरे प्रदेश में जिला स्तर पर आंदोलन शुरू किया जाएगा। ग्रामीण जलकर्मी संघ के प्रदेश अध्यक्ष मुनेश कुमार बेनीवाल, प्रदेश महासचिव सतविंदर सिंह सोही और प्रदेश कोषाध्यक्ष जेपी भाटिया ने कहा कि हरियाणा सरकार ने 1 अप्रैल 2026 से नया न्यूनतम वेतन लागू करने का वादा किया था, लेकिन डेढ़ महीना बीत जाने के बाद भी धरातल पर ग्रामीण जलकर्मियों को इसका कोई लाभ नहीं मिला है। आर्थिक तंगी से जूझ रहे कर्मियों में इसे लेकर भारी असंतोष है।

- आर्थिक तंगी से जूझ रहे कर्मियों में इसे लेकर भारी असंतोष

संघ के पदाधिकारियों ने सरकार से बढ़े हुए न्यूनतम वेतन का लाभ ग्रामीण जलकर्मियों को तुरंत देने की मांग की है। उन्होंने कहा कि यदि सरकार ने इसमें और देरी की, तो संघ की ओर से प्रदेश में जिला स्तर पर विरोध प्रदर्शन किए जाएंगे।

खरखड़ा फुट ओवरब्रिज के पास ट्राले ने कैंटर को मारी टक्कर, यातायात प्रभावित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| धारूहेड़ा

दिल्ली-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर गांव खरखड़ा स्थित फुट ओवरब्रिज के पास शनिवार सुबह हुई सड़क दुर्घटना से हाइवे पर लंबा जाम लग गया। हाइवे पर एक तेज रफ्तार ट्राले ने जयपुर से दिल्ली की ओर जा रहे कैंटर को पीछे से टक्कर मार दी। हादसे के बाद ट्राला चालक वाहन को मौके पर छोड़कर फरार हो गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार टक्कर इतनी जोरदार थी कि दोनों वाहन आपस में उलझकर वहीं खड़े रह गए। ट्राले का अगला हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। दुर्घटना के बाद हाइवे पर यातायात प्रभावित हो गया और जाम की स्थिति बन गई।

राहत की बात यह है कि दुर्घटना में कैंटर और ट्राले के चालक सुरक्षित हैं। सूचना मिलने के बाद ट्रैफिक पुलिस टीम मौके पर पहुंची और यातायात को सुचारू कराने की कार्रवाई शुरू की। पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को हाइवे से हटवाकर जाम खुलवाया, जिसके बाद यातायात सामान्य हुआ। स्थानीय लोगों ने हाइवे पर तेज गति से दौड़ रहे भारी वाहनों पर नियंत्रण और नियमित निगरानी की मांग की है, ताकि इस तरह की दुर्घटनाओं को रोका जा सकें।

रेवाड़ी। हाइवे पर खड़ा कैंटर व क्षतिग्रस्त ट्राला, दुर्घटना के बाद हाइवे पर लगा जाम। फोटो : हरिभूमि

रेलवे एसोसिएशन की बैठक में 8वें वेतन आयोग को लेकर किया मंथन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

नेशनल फडरेशन ऑफ इंडियन रेलवेमेन की सेवानिवृत्त एसोसिएशन ऑफ रेलवे की जिला शाखा की मासिक मीटिंग श्रीराम मंदिर रेलवे ड्रामेटिक क्लब में आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ संरक्षक मदन लाल ने की तथा संचालन केके सक्सेना जोनल अध्यक्ष ने किया। मीटिंग में 8वें वेतन आयोग को लेकर कुछ खास बातें रखी गई हैं, जिसमें कम से कम लेवल एक का वेतन 69000 रुपये रखने, फिटमेंट फैक्टर 3.833 रखने, वार्षिक वेतन वृद्धि तथा अतिरिक्त पेंशन की दरें बढ़ाने, पेंशन को अंतिम वेतन का 67 प्रतिशत के आधार पर निर्धारित करने तथा 8वें वेतन आयोग की सभी सिफारिशों को एक जनवरी 2026 से लागू करने की मांग की गई। इस मौके पर एसोसिएशन ने धारवी यादव को बीकॉम ऑनर्स में फाइनेंस मैनेजमेंट में गोल्ड मेडल प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया। सेवानिवृत्त गार्ड ईश्वर सिंह यादव की पोती धारवी ने बीकॉम ऑनर्स श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स दिल्ली से पास किया है। इस मौके पर रेलवे अस्पताल में दंत चिकित्सक की नियुक्ति करने, पुरूष एवं महिला वार्ड में एसी लगाने की भी मांग की गई।

रेवाड़ी। कार्यक्रम में धारवी यादव को सम्मानित करते हुए।

मौके पर ये मौजूद रहे

इस मौके पर विष्णु भगवान शर्मा, जीवन सिंह, धर्मपाल, पीके जोशी, प्रेम नेगी, रामजीवन, राजेन्द्र प्रसाद मीणा, प्रेम चन्द, महेश कुमार, जगदीश, हरिकिशन शेखावत, जेपी यादव, ओम प्रकाश, अतर सिंह, केके गुप्ता, राजेन्द्र सिंह, सुरेश कुमार, मुलायम सिंह, हरिसिंह अत्री, भागमल, सुभाष चन्द, ओमदत्त यादव, होशियर सिंह, श्रीराम गोठवाल व गजेन्द्र कुमार मौजूद थे।

महिलाओं ने शनिदेव मूर्ति स्थापना से पूर्व निकाली कलश यात्रा

धारूहेड़ा। गांव नंदरामपुर बास के बस स्टैंड स्थित शनि देव मंदिर में शनिवार को शनि देव की मूर्ति स्थापना अवसर पर कलश यात्रा व भंडारे का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में करीब 500 महिलाओं ने कलश यात्रा में भाग लिया। पंडित कालूराम ने मंत्रोंच्चारण के साथ हवन सम्पन्न कराया। इस अवसर पर शनिदेव मंदिर कमेटी से सुरेश उर्फ शिवली, अश्विनी यादव, रणधीर पंच, पूर्व सरपंच खुबराम,जोगेंद्र सिंह तंवर, बुलाराम पंच व ताराचंद पंच सहित अनेक श्रद्धालु मौजूद थे।

मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना के तहत स्पेशल ट्रेन भारत गौरव का रेवाड़ी आगमन पर स्वागत, श्रद्धालु हुए रवाना

धार्मिक यात्रा श्रद्धालुओं को सिख इतिहास, गुरु परंपरा व बलिदान की महान गाथाओं से जोड़ने का माध्यम

- हरियाणा के विभिन्न जिलों के 900 से अधिक श्रद्धालु इस विशेष यात्रा में शामिल हुए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना के तहत सिरसा से तख्त सचखंड श्री हजूर साहिब नांदेड़ महाराष्ट्र के लिए स्पेशल ट्रेन 'भारत गौरव' का शुक्रवार रात्रि रेवाड़ी रेलवे स्टेशन आगमन पर भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर जिला प्रशासन की ओर से एसडीएम सुरेश कुमार और भाजपा जिला अध्यक्ष डा. वंदना पोपली विशेष रूप से मौजूद थे। स्पेशल ट्रेन में रेवाड़ी के साथ झज्जर और महेन्द्रगढ़ के श्रद्धालुओं को भी रवाना किया गया। रेलवे स्टेशन पर श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए अलग-अलग जिलों के हेल्प डेस्क भी बनाए गए। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष डा. वंदना पोपली ने कहा कि यह धार्मिक यात्रा केवल दर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह श्रद्धालुओं को सिख इतिहास, गुरु परंपरा और बलिदान की महान गाथाओं से जोड़ने का माध्यम भी है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के विभिन्न जिलों के 900 से अधिक श्रद्धालु इस विशेष यात्रा में शामिल हुए हैं। उन्होंने कहा कि तख्त सचखंड श्री हजूर साहिब वह पावन स्थल है, जहां दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ज्योति ज्योत समाए थे। यह स्थान सिख इतिहास और आस्था का महत्वपूर्ण केंद्र माना जाता है। उन्होंने ट्रेन में श्रद्धालुओं से की गई व्यवस्थाओं के बारे में भी जानकारी ली।एसडीएम सुरेश कुमार ने कहा कि तख्त सचखंड श्री हजूर साहिब नांदेड़ महाराष्ट्र की पवित्र धरती का कण-कण गुरुओं के इतिहास, तप और बलिदान की गौरवगाथा समेटे हुए है। यहां पहुंचने वाला हर श्रद्धालु आध्यात्मिक ऊर्जा और आस्था का विशेष अनुभव करता है। उन्होंने बताया कि श्रद्धालु इस यात्रा के दौरान तख्त सचखंड श्री हजूर साहिब, गुरुद्वारा नगीना घाट साहिब, बाबा बंदा सिंह बहादुर से जुड़े ऐतिहासिक स्थल तथा माता साहिब कौर जी की तपोभूमि के दर्शन करेंगे। इसके अलावा श्रद्धालुओं को पवित्र गोदावरी नदी के दर्शन का अवसर भी मिलेगा। धार्मिक स्थलों के भ्रमण से श्रद्धालु सिख इतिहास और गुरु परंपराओं को नजदीक से जान सकेंगे। श्रद्धालुओं ने कहा कि यह यात्रा उनके जीवन की सबसे यादगार धार्मिक यात्राओं में शामिल रहेगी और वे गुरु साहिबानों के संदेश को समाज तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। उन्होंने यात्रा के लिए हरियाणा सरकार का आभार व्यक्त भी किया।

रेवाड़ी। रेलवे स्टेशन पर श्रद्धालुओं को संबोधित करते एसडीएम, रेलवे स्टेशन पर पहुंची ट्रेन व मौजूद भाजपा कार्यकर्ता। फोटो : हरिभूमि

खबर संक्षेप

हरियाणा युवा विज्ञान रत्न पुरस्कारों के लिए आवेदन 31 जुलाई तक

रेवाड़ी। अभिषेक मीणा ने बताया कि हरियाणा राज्य उच्चतर शिक्षा विभाग के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी निदेशालय की ओर से वर्ष 2026 के लिए हरियाणा विज्ञान रत्न पुरस्कार तथा हरियाणा युवा विज्ञान रत्न पुरस्कारों के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट योगदान देने वाले वैज्ञानिक 31 जुलाई तक आवेदन कर सकते हैं।

जाहिदपुर की प्रसन्नता का असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर चयन

कोसली। उपमंडल के गांव जाहिदपुर निवासी प्रसन्नता का चयन हरियाणा में रसायन विज्ञान की असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर हुआ है। गांव के पूर्व सरपंच हंसराज की पुत्रवधू प्रसन्नता के पति हंसपाल पंचायती राज विभाग में जूनियर

इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं। प्रसन्नता इससे पूर्व केंद्रीय विद्यालय संगठन में पीजीटी कैमिस्ट्री तथा राजस्थान में कैमिस्ट्री अध्यापिका के पद पर कार्य कर चुकी हैं। वर्तमान में वह सुठानी राजकीय उच्च विद्यालय में टीजीटी साइंस के पद पर कार्यरत है। प्रसन्नता ने अपनी सफलता का श्रेय परिजनों एवं गुरुजनों के मार्गदर्शन को दिया है। प्रसन्नता की सफलता पर सरपंच प्रतिनिधि परमजीत, रामअवतार व तुलसीराम ने बधाई दी है।

शनि जयंती पर शनिदेव के जयकारों से गूंजे मंदिर

पूरे दिन चले धार्मिक अनुष्ठान, सुहागिनों ने मनाया वट सावित्री का पर्व

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

शनिवार को शनि जयंती के अवसर पर जिले के शनि मंदिरों में धार्मिक अनुष्ठान किए गए। मंदिरों में सुबह से देर रात तक श्रृद्धालुओं की भारी भीड़ रही। शहर के सोलहराही तालाब सेक्टर-1 स्थित में प्राचीन शनि मंदिर, बाला सराय शनि मंदिर व बड़ा तालाब स्तित शनि मंदिर में भंडारे व जागरण का आयोजन किया गया। सोलहराही स्थित शनि मंदिर में आयोजित जागरण में भजन गायकों ने शनि महाराज की महिमा का गुणगान किया और मनमोहक झांकी पेश की। इस मौके पर नवनीत सोनी, नरेश अरधाना, अनिल कुमार, प्रेम पंडित, मोनू पंडित, भूपेंद्र सैनी, विक्रम, हेमंत, मनीष, वैदिक पंडित मोनू, संगीता, मनोज व केशव सहित अनेक श्रद्धालु मौजूद थे।

नाहड़ खंड के कृष्ण नगर स्थित शनि मंदिर में शनि जयंती के उपलक्ष्य में हवन व भंडारे का आयोजन किया गया। रात्रि को जागरण का आयोजन किया गया। भंडारे में सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

रेवाड़ी। सोलहराही स्थित मंदिर में सजा शनिदेव महाराज का दरबार तथा भंडारे का प्रसाद ग्रहण करते श्रृद्धालु। फोटो : हरिभूमि

शनिदेव मंदिर में हुआ हवन

गांव कालड़ावास स्थित शिव शनिदेव मंदिर में भगवान शनिदेव के प्रकटोत्सव के अवसर पर श्रद्धा एवं भक्ति के साथ हवन किया गया। गांव सहित आसपास के क्षेत्र के श्रद्धालुओं ने शनिदेव की पूजा-अर्चना की और परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की। मंदिर परिसर में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ विधिवत रूप से हवन कराया गया। श्रद्धालुओं ने हवन में आहुति डालकर समाज की खुशहाली की प्रार्थना की। कार्यक्रम में यजमान की भूमिका नरेंद्र गौड़ व उनकी पत्नी शीतल उपस्थित रहीं। हवन के बाद श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया। श्रद्धालुओं ने भजनों से शनिदेव की महिमा का गुणगान किया। ग्रामीणों ने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजनों से समाज में भाईचारे और धार्मिक भावना को बढ़ावा मिलता है। इस मौके पर शारदा देवी, जितेंद्र कुमार, नरेश कुमार, दिनेश कुमार, हुकम सिंह, साहिल गौड़, राजेंद्र कुमार, भारती गौड़, मुस्कान गौड़, खुशी गौड़, आयुष गौड़, मंजू देवी, मुन्नी देवी, राजेंद्र कुमार व रेखा देवी सहित अनेक श्रृद्धालु मौजूद थे।

वट सावित्री का व्रत रखकर पति की दीर्घायु की कामना की

शनिवार को सुहागिनों ने वट सावित्री का व्रत रखकर अपने पति की दीर्घायु की कामना की। सुहागिनों ने अपने घरों में ही सत्यवान सावित्री की कथा सुनी। व्रतियों ने वटवृक्ष की पूजा कर उसकी परिक्रमा भी की। शहर के विभिन्न मंदिरों में सुहागिनों का पूजा-अर्चना के लिए तांता लगा रहा। धार्मिक ग्रंथों में उल्लेख है कि सावित्री प्राचीन काल में अपने पति सत्यवान के प्राण वापिस लाने के लिए यमराज तक से भी भिड़ गई थी और पति के शव को वट वृक्ष के नीचे रखकर यमराज से आग्रह किया था कि उनके पति को जीवित किया जाए। यमराज को भी पतिव्रता सावित्री के सामने झुकना पड़ा था और उसके पति सत्यवान को जीवित भी कर दिया था। तभी से सुहागिनें व्रत रखकर वट वृक्ष की पूजा करती आ रही हैं। इसलिए वट वृक्ष में भी धार्मिक आस्थाएं अधिक हैं। वट वृक्ष की पूजा को पर्यावरण से भी जोडकर देखा जाता है। वटवृक्ष जोकि प्रकृति की देन है, उसकी पूजा कर सुहागिनें सौभाग्य का वरदान भी मांगती हैं।

रेवाड़ी। कालड़ावास स्थित मंदिर में शनि जयंती पर हवन करते श्रृद्धालु। फोटो : हरिभूमि

न्यूज डायरी

मेधावी विद्यार्थियों के सम्मान में निकाली रैली

रेवाड़ी। जैतपुर-शेखपुर ग्राम पंचायत की ओर से शनिवार को गांव के सरकारी स्कूल में दसवीं कक्षा में उत्तीर्ण हुए मेधावी विद्यार्थियों के लिए सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर पंचायत प्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों ने बच्चों को सम्मानित कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इससे पूर्व विद्यार्थियों के उत्साहवर्धन के लिए गांव में सम्मान यात्रा भी निकाली गई। गांव के सरपंच लोकेश कुमार ने कहा कि शिक्षा ही समाज और राष्ट्र की प्रगति का आधार है तथा बच्चों की मेहनत और सफलता पूरे गांव के लिए गर्व की बात है।

बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी पुरस्कृत

रेवाड़ी। हिंदू पब्लिक स्कूल बावल में कक्षा 10वीं एवं 12वीं के विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर सम्मानित किया गया। बोर्ड परीक्षा में मेरिट सूची में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को विशेष रूप से बधाई दी गई। विद्यालय के चेयरमैन एडवोकेट सिंघराम महलावत ने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने विद्यार्थियों को जीवन में निरंतर मेहनत एवं लगन से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय की निदंशिका सुनीता महलावत ने शानदार परिणाम का श्रेय विद्यार्थियों की सच्ची लगन, शिक्षकों की मेहनत एवं अभिभावकों के सहयोग को दिया। इस मौके पर प्राचार्या सोनाली महलावत ने कहा कि परिश्रम, अनुशासन एवं दृढ़ संकल्प से हर लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। इस मौके पर सभी शिक्षक व विद्यार्थी मौजूद थे।

नप चेयरपर्सन का किया सम्मान

रेवाड़ी। अमर बलिदानी गोरक्षक देवेंद्र यादव उर्फ सोनू सरपंच सम्मान समिति की ओर से शनिवार को नगर परिषद रेवाड़ी की नवनिर्वाचित चेयरपर्सन विनीता पीपल को बधाई दी गई। धर्माचार्य दलीप शास्त्री एवं सम्मान समिति ने महर्षि दयानंद सरस्वती का छाया चित्र एवं सनातन धर्म का पट्टका पहनाकर चेयरपर्सनका सम्मान किया। इस मौके पर रविंद्र आशावादी, राजकुमार कतोपुरी, शीशराम यादव, दयानंद आर्य जिला प्रभारी भारत स्वाभिमान ट्रस्ट, श्याम सुंदर जिला महामंत्री हिंदू युवा वाहिनी व विकास यादव महामंत्री युवा वाहिनी मौजूद थे।

मेरिट लाने वाले विद्यार्थी सम्मानित

रेवाड़ी। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हांसाका का दसवीं व बारहवीं बोर्ड का परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहा। दोनों कक्षाओं में 98 विद्यार्थियों में से 14 विद्यार्थियों ने मेधा सूची में स्थान बनाया। कक्षा 10वीं की छात्रा हितैषी व महक ने 500 में से 446 अंक प्राप्त कर स्कूल में प्रथम स्थान हासिल किया। वहीं इरक्षिता ने 438 अंक प्राप्त कर द्वितीय तथा ज्योति के 432 अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान पर रही। वही 12वीं कक्षा में किरण ने कला संकाय में 398 अंक और सरिता ने वाणिज्य संकाय में 392 अंक प्राप्त किए। दसवीं कक्षा में हितैषी, महक और राखी ने संगीत में और इरक्षिता ने संस्कृत में 100 में से 100 अंक प्राप्त किए। शनिवार को सभी मेधावी विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा में सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पूर्व प्राचार्य सुमेर सिंह, कंवरपाल, शिवकुमार, एसएमसी प्रधान नरेश, कविता, कृष्णा व भतेरी सहित शिक्षक व अभिभावक मौजूद थे। प्राचार्य सतीश कुमार ने उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम के लिए सभी अध्यापकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों को शुभकामनाएं दी। स्टाफ सदस्यों ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया।

विवेकियंस ने बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट रिजल्ट रचा कीर्तिमान

रेवाड़ी। लाखनौर स्थित विवेकानंद पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने सीबीएसई 12वीं व 10वीं बोर्ड की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करके विद्यालय का नाम पूरे जिले में रोशन किया है। बोर्ड परीक्षा में अपीयर हुए सभी विद्यार्थियों ने 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। कक्षा 10वीं से छात्रा आभा ने 98 प्रतिशत अंक लेकर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किश, वही इशिका ने 97 प्रतिशत, दीया शर्मा ने 96.2 प्रतिशत, आदित्य चौहान ने 95.6 प्रतिशत व तनीशा ने 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। कक्षा 12वीं में छात्रा जहानवी ने ह्यूमैनिटीज में 98 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया। रेनू ने विज्ञान संकाय में 94 प्रतिशत व दिव्या ने कॉमर्स में 93 प्रतिशत अंक प्राप्त कर पूरे क्षेत्र में परचम लहराया। इस उपलब्धि पर निर्देशक एडवोकेट सुधीर यादव ने सभी विद्यार्थियों को बधाई दी। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधन द्वारा सभी मेधावी विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों को सम्मानित किया गया।

विद्यार्थियों को डेंगू के लक्षण और बचाव के उपाय बताएं

राष्ट्रीय डेंगू दिवस के अवसर पर शनिवार को स्वास्थ्य विभाग की ओर से करावरा मनाकपुर स्थित एसडी सीनियर सैकेंडरी स्कूल में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. केशव और डा. चेतन ने की। कार्यक्रम में सीएचसी गुरावड़ा से हेल्थ इंस्पेक्टर बीरेन्द्र सिंह, अनूप कुमार, अशोक कुमार, भगोती तथा एमपीएचडब्ल्यू मासूक अली मौजूद थे। सीएचसी की टीम ने विद्यार्थियों व शिक्षकों को डेंगू के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने डेंगू के लक्षण तथा बचाव के बारे में अवगत कराया।

नप टीम ने सेक्टर–1 में चलाया सफाई अभियान

रेवाड़ी। नगर परिषद टीम की ओर से शनिवार को नई सोच नया शहर स्वच्छ हरियाणा अभियान के तहत सेक्टर-1 में आरडब्ल्यूए के सदस्यों के साथ विशेष सफाई अभियान चलाया गया। अभियान में सफाई कर्मचारियों के साथ-साथ सेक्टर-1 के निवासियों ने भी सहयोग दिया। सभी ने मिलकर सड़क, पार्क और सार्वजनिक स्थानों पर साफ-सफाई करके कचरे का उचित निस्तारण किया। इस पहल का उद्देश्य सफाई व्यवस्था को और अधिक मजबूत बनाना तथा शहर को स्वच्छ, सुंदर और स्वस्थ शहर बनाना है। इस मौके पर नगर परिषद के अधिकारियों ने नागरिकों से करते हुए कहा कि वे घर का कचरा इधर-उधर न फैंके, गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग रखें तथा स्वच्छता अभियान में निरंतर सहयोग दें। अभियान में स्वच्छ भारत मिशन की जिला ब्रांड एंबेसडर प्रियंका यादव, आरडब्ल्यूए सदस्य, स्वच्छ भारत मिशन से सिटी टीम लीडर रितेश आलोनकर, आईईसी टीम से कृष्ण सम्भवाल, शुभम कुमार, हर्ष कुमार, सेनिटेशन टीम से ओमप्रकाश, हर्ष शर्मा, व रोहित कुमार सहित अनेक सफाई कर्मचारियों ने योगदान दिया।

जांगिड़ ब्राह्मण सभा ने किया नगर पार्षद का अभिनंदन

रेवाड़ी। अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण जिला सभा की ओर से जिला अध्यक्ष कैलाश चंद्र जांगिड़ के नेतृत्व में नगर परिषद के वार्ड नंबर-13 से नवनिर्वाचित नगर पार्षद संतोष जांगड़ा का दौलतपुर स्थित उनके आवास पर अभिनंदन किया गया। सभा के पदाधिकारियों ने उन्हें अंगवस्त्र, पुष्पगुच्छ एवं पौधा भेंट कर बधाई दी। इस मौके पर सभा के अध्यक्ष ने कहा कि संतोष जांगड़ा की जीत वार्ड के विकास में मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह के मार्गदर्शन में नगर परिषद तथा नगर पालिका के विकास कार्यों को नई गति मिलेगी। नवनिर्वाचित पार्षद संतोष जांगड़ा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश और प्रदेश निरंतर विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। उन्होंने कहा कि वे वार्ड के सर्वांगीण विकास, स्वच्छता, मूलभूत सुविधाओं एवं जनसमस्याओं के समाधान के लिए पूरी निष्ठा और ईमानदारी से कार्य करेंगी। इस अवसर पर समाजसेवी डा. आर के जांगड़ा, लक्ष्मी देवी जांगड़ा, प्रीति जांगड़ा, राजेंद्र जांगड़ा, दीपक जांगिड़, हरिराम जांगिड़, कैलाश जांगड़ा, जय किशन व पंकज कुमार सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

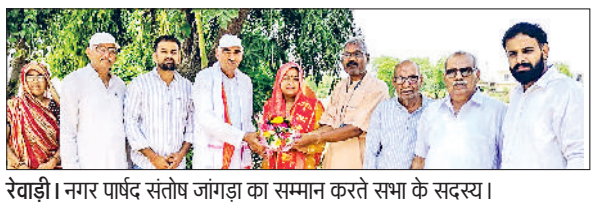

रेवाड़ी। नगर पार्षद संतोष जांगड़ा का सम्मान करते सभा के सदस्य।

राव बहादुर सिंह स्कूल के युगांत का बारहवीं बोर्ड परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

रेवाड़ी। यादव नगर स्थित राव बहादुर सिंह वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय का बारहवीं व दसवीं बोर्ड परीक्षा का परिणाम शानदार रहा। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर स्कूल और क्षेत्र का नाम रोशन किया। शनिवार को छात्र-छात्राओं, शिक्षकों और अभिभावकों को सम्मानित किया गया। सफल विद्यार्थियों ने अपनी उपलब्धि का श्रेय शिक्षकों के मार्गदर्शन और अभिभावकों के सहयोग को दिया। स्कूल के सह संचालक दीपक यादव ने बताया की बारहवीं कॉमर्स संकाय में छात्र युगांत शर्मा ने 96 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। विद्यालय के 21 विद्यार्थियों ने मेरिट में अपना नाम दर्ज कराया। वही दसवीं में छात्रा श्रियल ने 97 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। दसवीं में 31 विद्यार्थियों ने मेरिट सूची स्थान बनाया। विद्यालय प्रबंधक शिव कृष्ण और प्रधानाचार्य सुशील यादव ने सभी सफल छात्र-छात्राओं को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह परिणाम विद्यार्थियों की मेहनत, शिक्षकों के समर्पण और अभिभावकों के सहयोग का प्रतिफल है। इस मौके पर सभी शिक्षक मौजूद थे।

धार्मिक आयोजनों से समाज में एकता, सद्भाव और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता: वीर कुमार

कोसली। गांव नठेडा स्थित शनि मंदिर में शनि जयंती के पावन अवसर पर हवन व भंडारे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता वीर कुमार यादव ने क्षेत्रवासियों की सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। उन्होंने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजनों से समाज में एकता, सद्भाव और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, जो सभी के लिए कल्याणकारी है। इस मौके पर बाबा बलखंडी मंदिर के स्वामी मुकेश गिरी, शिव मंदिर के पुजारी भानु भगत, गांव के सरपंच मनोज कुमार, मंदिर कमेटी के प्रधान रणबीर सिंह, कैप्टन महेंद्र सिंह, पंडित नकुल शर्मा, भागमल, हैड मास्टर ओमप्रकाश, पूर्व जीएम डीआर शर्मा, पूर्व एसडीओ देवराज आदि मौजूद रहे।

विद्यार्थियों को डायल 112 व साइबर अपराधों को लेकर किया जागरूक

रेवाड़ी। महिलाओं व बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने व जागरूक करने के उद्देश्य से शनिवार को महिला थाना प्रभारी पीएसआई सरिता ने टीम के साथ यूरो इंटरनेशनल स्कूल धारूहेड़ा में विद्यार्थियों व स्टाफ सदस्यों को डायल-112, महिला विरुद्ध अपराध, साइबर अपराध, सेल्फ डिफेंस व नशे के दुष्परिणामों को लेकर जागरूक किया। पीएसआई सरिता ने कहा कि एक पढ़ी-लिखी नारी अपने अधिकारों को जानती है और वह किसी भी प्रकार के शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज उठाने में समर्थ होती है। वर्तमान में प्रत्येक बच्चे का अपने अधिकारों का ज्ञान होना आवश्यक है ताकि वह समाज की बुराइयों से लड़ सके और अपने हक के लिए आवाज उठा सकें। पुलिस टीम ने कहा कि नशा समाज की जड़ों को खोखला कर रहा है।

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और पेशेवर कौशल को विकसित करती इंटर्नशिप

हरिभूमि न्यूज ⏭मीरपुर

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग की ओर से 'इंटर्नशिप ब्लूप्रिंट' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सामाजिक कार्य विभाग से डा. सतेंद्र थे। कार्यक्रम का उद्देश्य मनोविज्ञान विभाग के द्वितीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों को इंटर्नशिप कार्यक्रम से जुड़ी आवश्यक जानकारी प्रदान करना तथा उनकी जिज्ञासाओं का समाधान करना था। इस मौके पर डा. सतेंद्र ने विद्यार्थियों को इंटर्नशिप के उद्देश्यों, कार्यप्रणाली एवं रिपोर्ट तैयार करने की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि एक प्रभावी इंटर्नशिप न केवल व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं पेशेवर कौशल को भी विकसित करती है। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने इंटर्नशिप प्रोग्राम से संबंधित विभिन्न प्रश्न पूछे, जिनका मुख्य वक्ता ने सरल एवं व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से समाधान किया। इस मौके पर इंटर्नशिप रिपोर्ट बनाने की संरचना, आवश्यक बिंदुओं तथा प्रस्तुतीकरण शैली पर चर्चा की गई। कार्यक्रम का संचालन विभाग के शिक्षक प्रभारी डा. संदीप कुमार ने किया। इस मौके पर विभाग से डा. सतीश कुमार, रोहित कुमार, रिसर्च स्कॉलर पारुल यादव व भूमिका मौजूद रही। मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष डा. विजेंद्र सिंह तथा डा. संदीप कुमार ने मुख्य वक्ता को पौधा भेंटकर आभार व्यक्त किया।

रेवाड़ी। विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए मुख्य वक्ता।

डेंगू एक गंभीर बीमारी समय रहते सावधानी बरतकर किया जा सकता बचाव

रेवाड़ी। सरकुलर रोड स्थित पीएम श्री गर्ल्स सीनियर सैकेंडरी स्कूल में शनिवार को जिला मलेरिया विभाग की ओर से राष्ट्रीय डेंगू दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सिविल सर्जन डा. नरेंद्र दहिया ने की। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को डेंगू बीमारी के प्रति जागरूक करने के साथ इसके बचाव के उपायों की जानकारी दी गई। इस अवसर पर जिला मलेरिया अधिकारी व डिप्टी सीएमओ डा. जोगेंद्र सिंह तंवर ने कहा कि डेंगू एक गंभीर बीमारी है, लेकिन समय रहते सावधानी बरतकर इससे बचाव किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि डेंगू का एडीज मच्छर साफ पानी में पनपता है और दिन के समय काटता है। इसलिए अपने घरों के आसपास पानी जमा नहीं होने दें। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने विद्यार्थियों को डेंगू के लक्षणों जैसे तेज बुखार, सिर दर्द, शरीर में दर्द, आंखों के पीछे दर्द और कमजोरी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डा. तंवर ने बच्चों को दिन के समय पूरी बाजू के कपड़े पहनने, पानी की टंकियों व कूलरों को ढककर रखने तथा मच्छरदानी व मॉस्कीटों रिफलेंट के उपाय अपनाने की सलाह दी। कार्यक्रम में राजेंद्र सिंह एसएमआई, हरिप्रकाश हेल्थ इंस्पेक्टर, रमेश कुमार, दिनेश यादव, सुरेश कुमार, राहुल, सुनील कुमार तथा विनोद कुमार सहित स्वास्थ्य विभाग के अनेक कर्मचारी मौजूद थे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

टेक्नोलॉजी ड्रिवन यूथ फॉर विकसित भारत विषय पर राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस कार्यक्रम

यूएई दुनिया का पहला देश, जिसने कानून लिखने में एआई का उपयोग किया: प्रो. दुरेजा

हरिभूमि न्यूज ⏭मीरपुर

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय में फामेर्सी विभाग की ओर से हरियाणा राज्य विज्ञान, नवाचार एवं प्रौद्योगिकी परिषद तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी निदेशालय के सहयोग से टेक्नोलॉजी ड्रिवन यूथ फॉर विकसित भारत विषय पर राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत में अधिष्ठाता शैक्षणिक मामले प्रोफेसर सुनील कुमार ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर असीम मिगलानी ने विकसित भारत-2047 की अवधारणा पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने युवाओं को देश की प्रगति में योगदान देने के लिए प्रेरित किया तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसी पहलों को भारत के उज्ज्वल भविष्य का आधार बताया। कुलसचिव प्रोफेसर दिलबाग सिंह ने कहा कि राष्ट्र के विकास के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान को निरंतर बढ़ाना और समाज तक पहुंचाना आवश्यक है। मुख्य वक्ता प्रोफेसर हरीश दुरेजा महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी रोहतक ने स्वास्थ्य सेवाओं में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यूएई दुनिया का पहला देश है, जिसने कानून लिखने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग किया है। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित नई दवाओं के विकास, पारकिंसन रोगियों की रिमोट मॉनिटरिंग, स्मार्ट टैबलेट और डिजिटल हेल्थ इंडस्ट्री जैसे विषयों पर जानकारी दी।

रेवाड़ी। कार्यक्रम में जानकारी देते कुलपति असीम मिगलानी। फोटो : हरिभूमि

सभ्यता के विकास में तकनीक की भूमिका पर चर्चा

मुख्य वक्ता प्रोफेसर विपन कुमार परिहार सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हरियाणा ने मानव सभ्यता के विकास में तकनीक की भूमिका पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि आग की खोज से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक की यात्रा मानव बुद्धिमत्ता और तकनीकी विकास का परिणाम है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तीव्र तकनीकी प्रगति आवश्यक है। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने पोस्टर प्रतियोगिता और ओरल प्रेजेंटेशन में बढ़ चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम संयोजक डा. हेमंत कुमार यादव ने कुलपति, कुलसचिव, विभागाध्यक्षों, शिक्षकों, गैर-शिक्षक कर्मचारियों तथा आयोजन समिति के सभी सदस्यों का धन्यवाद किया।

अब जन्मेंगे मनचाहे डिजाइनर बेबी!

अब तक तो यही माना जाता रहा है कि जन्म लेने वाले बच्चे का रूप, रंग, गुण या उसकी कोई बीमारी प्रकृति ही निर्धारित करती है। लेकिन जेनेटिक इंजीनियरिंग की नई तकनीक से आने वाले समय में मनचाहे यानी कस्टमाइज्ड बेबी जन्म ले सकेंगे। क्या है यह तकनीक, क्या हो सकते हैं इसके फायदे या नुकसान, यहां बता रहे हैं विस्तार से।

{ कवर स्टोरी / शिखर चंद जैन }

'नमस्कार डॉक्टर साहब! हम एक ऐसा बेबी चाहते हैं, जो हमारी जेनेटिक बीमारियों से दूर रहे। उसका आई क्यू लेवल शानदार हो, चश्मा न लगे उसको, टॉल फिगर हो, कॉम्प्लेक्शन फेयर हो।'

क्या आपने कल्पना की है कि आने वाले दौर में पैरेंट्स किसी फर्टिलिटी क्लीनिक पर जाकर डॉक्टर से कुछ ऐसा कहेंगे? यह मजाक की बात या कोरी कल्पना नहीं है। विज्ञान इतनी तरक्की कर रहा है कि निकट भविष्य में यह संभव होगा। इस तकनीक से पैदा होने वाले बच्चों को 'डिजाइनर बेबी' कहा जाएगा।

क्या है यह तकनीक

डिजाइनर बेबी ऐसा बच्चा होता है, जिसके जेनेटिक स्ट्रक्चर (आनुवंशिक संरचना) को पैदा होने से पहले ही बदल दिया जाता है। यह मुख्य रूप से 'क्रिसपर-केस नाइन' जैसी जीन एडिटिंग तकनीक के जरिए किया जाता है। इसके तहत भ्रूण से खराब जीन कतरकर होने वाले माता-पिता के पसंदीदा गुणों वाले जीन को जोड़ा जा सकता है। ये कस्टम-मेड बच्चे होंगे। वांछनीय गुणों वाले बच्चे पैदा करने यानी बनाने के लिए, होने वाले माता-पिता आईवीएफ क्लीनिक में भ्रूणों का चयन बीमारी के जोखिम के आधार पर कर रहे हैं। इस प्रक्रिया को प्री-इंप्लांटेशन जेनेटिक डायग्नोसिस कहा जाता है। मुख्य रूप से वंशानुगत बीमारियों को रोकने के लिए इसका अभ्यास किया जाता है। इसमें आईवीएफ से बनाए गए भ्रूणों की स्क्रीनिंग की जाती है और माता-पिता उस भ्रूण का चयन करते हैं, जिसे वे एक ऐसे बच्चे के लिए प्रत्यारोपित कर सकते हैं, जिसमें आनुवंशिक विकार के सबसे कम जोखिम होने की भविष्यवाणी की जाती है। इसमें एक एंब्रियो-सेलेक्शन/स्क्रीनिंग कंपनी और आईवीएफ प्रोवाइडर 8-14 दिनों तक रोजाना हार्मोन इंजेक्शन देकर कम से कम 15 अंडे निकालते हैं, जिन्हें पसंद के स्पर्म से फर्टिलाइज किया जाता है। 4-5 दिनों के बाद, एक ब्लास्टोसिस्ट बनता है। यह कोशिकाओं की एक खोखली गेंद जैसी होती है, जिसमें एक अंदरूनी द्रव्य और बाहरी परत होती है। बाहरी परत प्लेसेंटा में विकसित होती है। अंदरूनी द्रव्य भ्रूण बनता है। हर भ्रूण से निकाले गए अंशों की जेनेटिक बीमारी/क्रीमोसोमल असामान्यताओं के लिए स्क्रीनिंग की जाती है और मापे गए हर पैरामीटर के लिए पॉलीजेनिक (कई-जीन) स्कोर दिए जाते हैं। माता-पिता चुनते हैं कि कौन-सा भ्रूण इंप्लांट करना है। दुनिया के सबसे पहले डिजाइनर बेबी होने का दावा वर्ष 2018 में चीन के वैज्ञानिक हे जियानकुई ने किया था, जिन्होंने जुड़वां बच्चियों (लुलु और नाना) के जीन एडिट किए थे।

यूजेनिक्स क्या है

यूजेनिक्स एक ऐसा विचार और पद्धति है, जिसका उद्देश्य मानव आबादी की आनुवंशिक गुणवत्ता में सुधार करना है, जिसमें स्वस्थ और वांछनीय गुणों वाले लोगों के प्रजनन को बढ़ावा दिया जाता है और कम वांछनीय या अवांछनीय गुणों वाले लोगों के प्रजनन को रोका जाता है, जो अकसर जबरन नसबंदी और भेदभावपूर्ण प्रथाओं से जुड़ा रहा है, खासकर नाजी जर्मनी और अमेरिका में। इसे विज्ञान के रूप में खारिज कर दिया गया है।

जीन एडिटिंग के प्रभाव

जीन एडिटिंग के द्वारा डिजाइनर बेबी बनाने के कई प्लस और माइनस परिणाम हो सकते हैं।

बीमारियों से मुक्ति: इस तकनीक का असली उद्देश्य बच्चों को कैंसर, अल्जाइमर और एचआईवी जैसी वंशानुगत बीमारियों से बचाना है।

बनगे सुपर ह्यूमन: जैसे-जैसे तकनीक ज्यादा विकसित होगी भविष्य में वैज्ञानिक ऐसी कोशिश कर सकते हैं, जिससे बच्चे की मांसपेशियों की ताकत और याददाश्त को बढ़ाया जा सकेगा और वे 'सुपर ह्यूमन' बन सकें। कुछ देशों में आईवीएफ क्लीनिक पहले से ही माता-पिता को बच्चे की आंखों का रंग चुनने का विकल्प देने की दिशा में शोध कर रहे हैं। वर्तमान में यह प्रक्रिया इतनी महंगी है कि इसे केवल दुनिया के अमीर लोग ही अपना सकते हैं।

ब्लास्टोसिस्ट क्या है

ब्लास्टोसिस्ट भ्रूण के विकास का एक प्रारंभिक चरण है, जो फर्टिलाइजेशन के लगभग 5-6 दिनों बाद बनता है, जिसमें लगभग 200-300 कोशिकाएं होती हैं और इसमें दो मुख्य भाग होते हैं, आंतरिक कोशिका द्रव्यमान (जो शिशु बनेगा) और ट्रोफोब्लास्ट (जो प्लेसेंटा बनेगा)। यह वह अवस्था होती है, जब भ्रूण गर्भाशय की परत में प्रत्यारोपित होता है, खासकर आईवीएफ प्रक्रियाओं में।

चुनौतियां भी कम नहीं

जीन एडिटिंग के जरिए मनचाहे डिजाइनर बेबी बनाने की तकनीक विकसित होने के कुछ नेगेटिव परिणाम भी भविष्य में देखने को मिल सकते हैं। यदि केवल अमीर लोग ही 'जीनियस' बच्चे पैदा कर पाएंगे, तो समाज में एक नया भेदभाव उत्पन्न हो सकता है। साथ ही जीन एडिटिंग के दीर्घकालिक प्रभाव क्या होंगे, यह अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। एक छोटी-सी गलती बच्चे के स्वास्थ्य पर बहुत भारी पड़ सकती है। उसके जीवन की पूरी दिशा बदल सकती है।

जीन एडिटिंग के जरिए मनचाहे बच्चे पाने के संबंध में एक सवाल यह भी है कि भ्रूणों की एक श्रंखला में से चुनाव या जीन-एडिटेड भ्रूणों के बावजूद, क्या माता-पिता को भ्रूण के गैर-चिकित्सा लक्षणों को चुनने की अनुमति दी जानी चाहिए? क्या जीन को चुनकर/बदलकर विशेषताओं को 'डिजाइन' किया जा सकता है? क्या आप अंततः अपने बच्चे के जेनेटिक कोड को अपनी मर्जी से बना सकते हैं? समाज शास्त्री कहते हैं डिजाइनर बेबी तकनीक मानव जाति के लिए एक वरदान साबित हो सकती है यदि इसका उपयोग केवल जानलेवा बीमारियों को खत्म करने के लिए किया जाए। लेकिन यदि इसे खूबसूरती और ताकत का पैमाना बनाया गया, तो यह मानवता के लिए नई चुनौतियां खड़ी कर सकता है। समाज में एक नए तरह का भेदभाव और विघटन पैदा कर सकता है। कई समाजशास्त्री चिंतकों का मानना है कि जीवन के साथ इस तरह का बदलाव करना प्रकृति के नियमों का उल्लंघन होगा। कुछ वैज्ञानिक चेतावनी देते हैं कि आधुनिक जेनेटिक स्क्रीनिंग और काउंसलिंग का इस्तेमाल माता-पिता पर दबाव बनाने के लिए किया जा सकता है। अगर समाज कुछ खास लक्षणों को बढ़ावा देता है, तो प्रजनन का चुनाव सामाजिक दबाव बन जाता है। व्यवहार, बुद्धिमत्ता या व्यक्तित्व जैसी चीजों के लिए भ्रूण की स्क्रीनिंग करना, पूर्व में सामने आए यूजेनिक्स पद्धति जैसा होगा, जिसमें यह कंट्रोल करने की कोशिश की गई थी कि किसे पैदा होने की इजाजत है।

कहने का सार है कि आने वाले समय में जीन एडिटिंग से डिजाइनर बेबी के जन्म लेने का चलन बढ़ सकता है। लेकिन इसके परिणाम कितने सकारात्मक या नकारात्मक होंगे, यह तो भविष्य में ही पता चलेगा। *

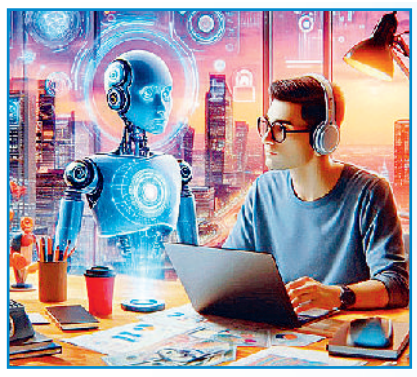

जिस तेजी से तकनीक का दखल बढ़ता जा रहा है, हमारी जीवनशैली आने वाले समय में पूरी तरह बदल जाएगी। आने वाले दिनों में यंगस्टर्स को हाई इनकम वाली कई ऐसी जॉब्स मिलेंगी, जो पूरी तरह हाईटेक होंगी। इनमें से कुछ फ्यूचरिस्टिक जॉब्स पर एक नजर।

यंगस्टर्स को लुभाएंगी फ्यूचरिस्टिक जॉब्स

{ अपकमिंग ट्रेंड }

अंजू जैन

आज के दौर में यंगस्टर्स के लिए करियर की परिभाषा पूरी तरह बदल चुकी है। अब डॉक्टर, इंजीनियर या सरकारी नौकरी ही एकमात्र 'सफल' विकल्प नहीं रह गए हैं। अगर आपमें हुनर है और आप लीक से हटकर सोचने और करने का जज्बा रखते हैं, तो आज का डिजिटल युग आपको शानदार इनकम के मौके दे सकता है। अच्छी बात यह है कि 'फ्यूचरिस्टिक' जॉब्स के लिए आपको किसी बड़े कॉलेज की भारी-भरकम फीस भरकर डिग्री पाने की जरूरत नहीं है। आपमें नई टेक्नोलॉजी सीखने की लगन होनी चाहिए। ऐसे ही कुछ फ्यूचरिस्टिक जॉब्स के बारे में आप भी जानिए, ताकि आने वाले दौर के लिए आप खुद को टेकरेडी बना सकें।

डेटा डिटेक्टिव: करियर की दुनिया में कहा जाता है कि 'डेटा नया हीरा है।' डेटा साइंटिस्ट का काम बिखरे हुए आंकड़ों से अपने लिए काम की जानकारी निकालना है। यह जॉब उन युवाओं के लिए शानदार है, जिनकी गणित और लॉजिक पर पकड़ मजबूत है। इसमें शुरुआती सैलरी ही कई पारंपरिक नौकरियों के टॉप लेवल के बराबर होती है। गूगल खुद कोर्सेरा जैसे प्लेटफॉर्म पर डेटा एनालिटिक्स और साइबर सिक्योरिटी के सर्टिफिकेशन कोर्स कराता है। साथ ही साइबेरी, साइबर सिक्योरिटी संबंधी नई तकनीकें सीखने के लिए यह दुनिया का सबसे बड़ा फ्री कम्युनिटी प्लेटफॉर्म है।

गेमिंग और ई-स्पोर्ट्स: वीडियो गेम अब सिर्फ टाइम पास नहीं रहा। प्रोफेशनल गेमर्स, गेम स्ट्रीमर्स और गेम डेवलपर्स आज लाखों-करोड़ों में खेल रहे हैं। इंटरनेशनल ई-स्पोर्ट्स टूर्नामेंट्स में प्राइज मनी अब किसी क्रिकेट वर्ल्ड कप से कम नहीं होती। अगर आप इसमें अपनी जगह बनाना चाहते हैं, तो कुछ बातों पर ध्यान दें। अपना खास फील्ड चुनें। ई-स्पोर्ट्स का मतलब सिर्फ गेम खेलना नहीं है। आप इनमें से अपनी रुचि के अनुसार कई क्षेत्र चुन सकते हैं, जैसे प्रोफेशनल प्लेयर यानी टूर्नामेंट में हिस्सा लेना, कंटेंट क्रिएटर या स्ट्रीमर यानी यूट्यूब या ट्विच पर गेमप्ले दिखाना, गेम एनालिस्ट/कोच यानी गेम की रणनीति समझना, मैनेजमेंट यानी टीम मैनेजर या इवेंट ऑर्गेनाइजर बनना।

आपको इसके लिए जरूरी स्किल्स सीखनी पड़ेगी। किसी एक गेम को चुनें और उसमें एक्सपर्ट बनें। इसके लिए रोजाना प्रैक्टिस और अपनी गलतियों का आकलन करना जरूरी है। इनके साथ-साथ टीम के साथ तालमेल बिठाने के लिए अच्छी बातचीत की कला सीखें। महारत पाने के लिए सबसे जरूरी है तकनीकी ज्ञान।

प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग: चैटजीपीटी जैसे एआई टूल्स के आने से अब 'प्रॉम्प्ट इंजीनियर' की भारी डिमांड हो गई है। इसमें आपको कोडिंग नहीं, बल्कि एआई से सही तरीके से काम करवाने की कला (सही निर्देश देना) आना चाहिए। बड़ी कंपनियां इसके लिए करोड़ों का पैकेज देने को तैयार हैं। इसे सीखने के लिए एंड्रयू एनजी द्वारा संचालित, चैटजीपीटी प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग फॉर डेवलपर्स एक शानदार फ्री कोर्स है। इसके अलावा लर्न प्रॉम्पटिंग एक ओपन-सोर्स गाइड है, जो आपको मुफ्त में एआई से बेहतर तरीके से कम्युनिकेट करना सिखाती है।

कंटेंट क्रिएशन और इंफ्लुएंसर मार्केटिंग: यूट्यूब, इंस्टाग्राम और पॉडकास्ट अब सिर्फ मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि फुल-टाइम बिजनेस बन चुके हैं। एक खास विषय पर अच्छी पकड़ और दर्शकों से जुड़ने का हुनर आपको ब्रांड एंडोर्समेंट के जरिए रातों-रात सेलिब्रिटी और अमीर बना सकता है। फाइनेंस की जानकारी देने वाले फिनफ्लुएंसर और डिजिटल मार्केटिंग का फील्ड भी अच्छा है। डिजिटल मार्केटिंग की बेसिक जानकारी के लिए आप गूगल डिजिटल गैरेज मुफ्त में इस्तेमाल कर सकते हैं।

सस्टेनेबिलिटी कंसल्टेंट: दुनिया अब पर्यावरण को लेकर गंभीर है। कंपनियां ऐसे लोगों को खोजती रहती हैं, जो उन्हें 'ईको-फ्रेंडली' बनने में मदद करें। अगर आप पर्यावरण प्रेमी हैं और बिजनेस की समझ रखते हैं, तो यह क्षेत्र भविष्य का सबसे बड़ा मार्केट है। सस्टेनेबिलिटी कंसल्टेंट वह पेशेवर होता है, जो कंपनियों और संगठनों को पर्यावरण के अनुकूल काम करने और अपने कार्बन फुटप्रिंट को कम करने की सलाह देता है। इसके लिए संबंधित शैक्षणिक योग्यता जरूरी है। पर्यावरण प्रबंधन या ईएसजी में (पर्यावरण, सामाजिक और शासन) विशेषज्ञता हासिल करना आपकी प्रोफाइल को बेहतर बनाता है। एक सफल कंसल्टेंट बनने के लिए आपको तकनीकी और सॉफ्ट स्किल्स दोनों की आवश्यकता होती है। जैसे कार्बन उत्सर्जन और पानी के उपयोग जैसे डेटा का विश्लेषण करना आना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार रिपोर्ट तैयार करना आना चाहिए। अपने क्लाइंट के वित्तीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए स्थाई व्यावसायिक रणनीतियां बनाने की चतुराई होनी चाहिए। साथ ही आप में अपने क्लाइंट्स को जटिल पर्यावरणीय नीतियों को सरल भाषा में समझाने की कला भी होनी चाहिए। *

{ कविता }

अवतार सिंह अक्षरजीवी

स्लेटीपन

कोई सुख, नहीं होता पूरा सुख
कोई दुख, नहीं होता पूरा दुख
चरित्र आधे-अधूरे होते हैं
भावनाएं-कई रंगों का मिश्रण,
एक कोने पर थोड़ा-सा सफेद
दूसरे किनारे पर जरा-सा काला
इनके बीच में बहुत सारा स्लेटी होता है।
सुख में नुकसान ढूंढ़ लेता है मन
और दुख में आनंद तलाश लेता है,
गीतों में से निकाल सकते हैं कंक्रीट
और राख में भी संगीत देख सकते हैं,
किसी का स्वभाव कैसा भी हो
हमारे अनुकूल हो, बस ठीक है जैसे
गर्मियों का आलोचक है संसार लेकिन
शहर की खाली सड़कें, कम ट्रैफिक
इस ऋतु को बेहतर घोषित करने में
कहीं न कहीं विवश सा कर देता है।

पतझड़

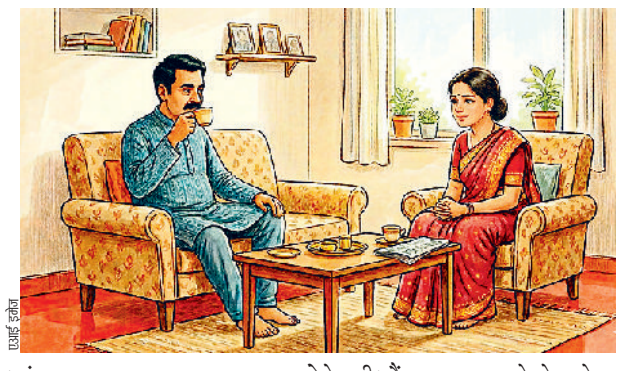

उसकी दरवाजे पर हल्की-सी वह दस्तक मुझे आज भी याद है। दरवाजे की सांकल खोलते ही उसे सामने पाया तो मैं एक बारगी ठगा-सा रह गया। सारा केश विन्यास अस्त-व्यस्त था, चेहरे की लालिमा कहीं खो सी गई थी। आंखों के नीचे स्याही की एक मोटी रेखा ने मुझे झकझोर दिया। मैंने उसके शांत लेकिन अंदर तक उद्वेलित चेहरे को पढ़ने का प्रयास किया। मुझे लगा कि वह नितांत अकेली वन में खड़ी एक प्यासी हिरनी सी है, जो अपने साथी के बिछड़ जाने पर अपनी गोल-गोल चपल आंखों में अतीत के कितने ही पल समेटे हुए है। मैं और वह किंकर्तव्यविमूढ़ से एक-दूसरे को कुछ देर तक निहारते रह गए। तंद्रा तब टूटी, जब बादलों की तेज गड़गड़ाहट ने हमें बारिश होने का अहसास दिलाया। 'आओ न! बाहर क्यों खड़ी हो?' मैंने सहज भाव से उसे अंदर आने का निमंत्रण दिया। ऐसा लगा कि हम वर्षों वर्ष अलग रहने के बावजूद भी भावनात्मक रूप से कहीं जुड़े हुए हैं। गहरी चुप्पी के साथ वह अंदर आ गई और सोफे के एक किनारे पर सिमट कर जड़वत बैठ गई। 'आज अचानक, इस तरह!' मैंने खामोशी को तोड़ने का प्रयास किया। सुनते ही उसकी आंखों में लाल डोरे तैरने लगे, जिन्हें मैंने साफतौर पर महसूस किया। 'कुछ परेशान सी हो! क्या हुआ?' मेरे यह पूछते ही वह संयम खो बैठी। आंखों में बरसों से सिमटा दर्द एकाएक आंसुओं की धार बनकर बह निकला। जब तक मैं कुछ समझ पाता वह फूट-फूटकर रोने लगी। मैं एकटक उसके मन का बोझ हल्का होते देखता रहा। कुछ समय बीता और वह धीरे से कुछ बुदबुदाई। मैंने सुना वह प्रायश्चित कर रही थी। 'मुझे माफ कर दो सुमी! मैं हार गई हूं। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।' उसकी आवाज की कंपकंपी को मैंने सर्द झौंके सा महसूस किया। एक ठंडी सिहरन मेरे तन-बदन में दौड़ गई। कुछ देर बाद मैं चाय बनाकर ले आया। मेरे आग्रह पर उसने चाय का कप उठा लिया। 'याद है मिनी...' मैंने उसे टटोलते हुए कहा, 'मैंने कभी भी अपने हाथ से चाय नहीं बनाई और न ही मैं आज तक ठीक से चाय बनाना सीख सका, क्योंकि तुमने मुझे अपने ऊपर इतना निर्भर कर दिया था। तुम कहती थी कि मेरे होते तुम चाय क्यों बनाओगे? सब कुछ बदल गया इधर कुछ सालों से! देखो तो चाय ठीक बनी है या नहीं? मिनी ने हां में सिर हिलाया और उसकी आंखें मेरे चेहरे पर ठहर गईं। प्रशंसा की यह मूक भाषा मैंने उसकी आंखों में पहली बार पढ़ी थी। 'तुम्हें पता है सुमी! मैं भी इतने बरस, इतनी अकेली रही हूं कि चैन की एक सांस भी न ले सकी। हर घड़ी तुम्हारे साथ बीते पल मुझे कुरेदते रहते। मेरा अहंकार मुझे धीरे-धीरे खोखला करता गया और मैं घुन लगे पेड़ की तरह अंदर से बिल्कुल बेजान हो गई। मुझमें अकेले खड़े रहने की भी ताकत नहीं बची, सुमी मैं टूट गई हूं। मुझे मेरा सहारा वापस दे दो प्लीज। अब मैं तुम्हारे सहारे जीना चाहती हूं।' उसका क्रंदन मुझे भीतर तक सालता चला गया। दस साल पहले वह उस पत्ते की तरह मुझसे अलग हो गई थी, जो पतझड़ के मौसम में एक क्षण में अपनी शाख से अलग हो जाता है। उसने मुड़कर भी नहीं देखा था तब। घर छोड़कर जाते समय उसने अपने दोनों बच्चों रजत और सजल को भी नहीं पुकारा। एक निष्ठुर मां बनकर उसने घर में कदम न रखने की कसम खाई थी और फिर लौटकर नहीं आई। आज दस साल बीतने के बाद वक्त ने करवट ली थी और हम दोनों उसी कमरे में एक बार फिर साथ बैठे हैं। *

-डॉ. सुबोध भटनागर

तस्वीर

{ लघुकथाएं }

पा-पापा आप ये क्या देख रहे हैं?' अशोक के बेटे ने पूछा। 'बेटा एक पुरानी तस्वीर देख रहा हूं। अपने भाई-बहनों की।' आंखें नम करते हुए अशोक ने जवाब दिया। 'कौन-कौन हैं ये?' बेटे ने तस्वीर को गौर से देखते हुए पूछा। तस्वीर को दिखाते हुए अशोक बोले, 'पीली ड्रेस वाली तेरी बड़ी बुआ, पिंक ड्रेस में मंझली बुआ और लाल में जो बैठी है, वो छोटी बुआ।' 'और ये हरी ड्रेस में कौन है?' बेटे ने पूछा। 'अरे यह मेरा छोटा भाई श्यामू यानी तेरा चाचू।' अशोक ने बताया। 'इसका मतलब नीली शर्ट वाले आप ही हैं।' बेटे ने शरारती लहजे में कहा। अशोक ने मुस्कुराते हुए हां में गर्दन हिला दी। 'लेकिन पापा इनको तो मैंने कभी देखा ही नहीं। बुआ और चाचू अब कहां हैं और अपने घर क्यों नहीं आते?' बेटे ने फिर सवाल किया। अशोक ने स्वयं को संभालते हुए कहा, 'हम सबको पिताजी ने यानी तुम्हारे दादाजी ने खूब पढ़ाया-लिखाया लेकिन...' 'लेकिन क्या पापा?' बेटे ने पूछा। 'ये सब विदेश में जाकर बस गए वहीं बड़ी-बड़ी कंपनियों में इंजीनियर हैं।' अशोक ने उदास मन से जवाब दिया। 'आप क्यों नहीं गए विदेश पापा पढ़े-लिखे तो आप भी बहुत है।' बेटे ने पूछा। 'बेटा, मैं भी जाने को तो चला जाता लेकिन बूढ़े मां-बाप की जिम्मेदारी थी मुझ पर... उनकी देखभाल जो करनी थी।' अशोक ने कहा। 'तो क्या बड़े का ही कर्तव्य होता है मां-बाप की सेवा करना, छोटों का नहीं?' बेटे ने थोड़ा गंभीर होते हुए पूछा। 'होता तो है लेकिन कोई समझे तब ना!' उन्होंने लंबी सांस भरते हुए कहा। बेटे का चेहरा उतर गया। उसके उतरे चेहरे को देखकर अशोक ने पूछा, 'अरे तुमने मुंह क्यों लटका लिया?' उसने धीरे से कहा, 'इसका मतलब तो यह हुआ कि मैं बड़ा होकर विदेश नहीं जा सकता।' 'क... क... क्यों... नहीं जा सकते तुम?' अशोक ने आश्चर्य से पूछा। 'मैं तो आपका इकलौता बेटा हूं ना इसलिए। मुझे तो बड़े होने की भूमिका निभानी है, छोटे होने की नहीं।' बेटा यह कहते हुए अपने पापा के गले से लिपट गया। बेड पर रखे एलबम के पन्ने हवा के संग फड़फड़ा रहे थे। *

-गोविंद भारद्वाज

{ पत्रिका चर्चा / विज्ञान भूषण }

लोक-संस्कृति का प्रवाह

वर्तमान आधुनिकता के हाहाकारी बयार और पश्चिमी अंधानुकरण के दौर में जब जन सामान्य, अपनी जड़ों से दूर होता जा रहा है, ऐसे में लोक संस्कृति से जुड़ाव की दिशा में किया गया छोटा सा प्रयास भी बहुत मायने रखता है। इस लिहाज से हाल में प्रकाशित हुए 'नवोदित प्रवाह' के लोक संस्कृति विशेषांक की सराहना की जानी चाहिए। इसमें देश के लगभग हर प्रदेश की लोक संस्कृति की बहुरंगी छवि देखी जा सकती है। संस्कृति की महत्ता को रेखांकित करते हुए वरिष्ठ लेखक राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी लिखते हैं, 'संस्कृति जीवन के साथ चलती है, जीवन के प्रवाह में बहती है, जीवन को गति देती है, जीवन को प्रेरित और निर्देशित करती है।' रमई काका पर गंगा प्रसाद शर्मा का लेख, कजली पर कृष्ण कुमार यादव का लेख, लावणी लोकनृत्य पर इंदिरा किसलय का लेख समेत पूर्वोत्तर राज्यों की सांस्कृतिक विरासत पर भी बढ़िया लेख यहां पढ़े जा सकते हैं। बंगाल के लोक साहित्य पर अल्पना सिंह का लेख, छत्तीसगढ़ के लोकगीत और लोकनृत्य पर ममता तिवारी का लेख भी पठनीय है। इनके अलावा 'महुआ घटवारिनः एक अधूरी प्रेम कहानी' (कहानी), 'गर्व या मातम' (लघुकथा) और लोक-सांस्कृतिक रंग में रंगी बुद्धिनाथ मिश्र, आकांक्षा द्विवेदी, कृष्ण बिहारी, उद्भ्रांत की कविताएं विशेष रूप से पठनीय हैं। वरिष्ठ कवि बाल स्वरूप राही के साक्षात्कार ने इस अंक की महत्ता को और बढ़ा दिया है। *

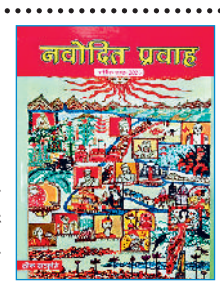

पत्रिका: नवोदित प्रवाह-वार्षिकांक 2026 (लोक संस्कृति विशेष),
संपादक: रजनीश त्रिवेदी 'आलोक', **मूल्य:** 200 रुपए
प्रकाशन स्थल: देहरादून, उत्तराखंड

सुदर्शन सेंड आर्ट म्यूजियम पुरी

ओडिशा के समुद्र तट के पास स्थित इस म्यूजियम की स्थापना मशहूर सेंड आर्टिस्ट सुदर्शन पट्टनायक ने साल 2010 में की थी। इसका उद्देश्य सेंड आर्ट को वैश्विक पहचान दिलाना और सामाजिक संदेशों को कला के माध्यम से प्रस्तुत करना है। यहां रेत से बनी विशाल मूर्तियां प्रदर्शित की जाती हैं, जिनमें भगवान श्री जगन्नाथ, पर्यावरण संरक्षण, विश्व शांति, आध्यात्मिकता और भारतीय संस्कृति से जुड़े विषय प्रमुख होते हैं। रेत जैसी साधारण चीज को अद्भुत कला में बदल देना, इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। सामान्यतः समुद्र तट पर बनाई गई सेंड आर्ट कुछ समय बाद लहरों से नष्ट हो जाती है, लेकिन यहां विशेष तकनीक और केमिकल ट्रीटमेंट की मदद से स्कल्पचरों को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जाता है। अपनी इस अनूठी कला के लिए सुदर्शन पट्टनायक को भारत सरकार द्वारा पद्म श्री सम्मान मिल चुका है। *

काइट म्यूजियम अहमदाबाद

गुजरात के अहमदाबाद में स्थित इस काइट म्यूजियम की स्थापना सन 1985 में भानुभाई शाह की पतंगों के निजी संग्रह से हुई थी। यहां पतंगों की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और कलात्मक विविधता देखने को मिलती है। यहां भारत और विदेशों की 125 से अधिक अत्यंत दुर्लभ और कलात्मक पतंगें रखी गई हैं, जिनमें जापान, मलेशिया, कोरिया, अमेरिका जैसे देशों की पतंगे भी शामिल हैं। कुछ पतंगें मिनिएचर आकार की हैं, तो कुछ विशाल और अत्यंत कलात्मक हैं। संग्रहालय में हाथ से चित्रित, मिरर वर्क और ब्लॉक प्रिंट वाली पारंपरिक गुजराती पतंगें भी हैं। यहां एक 16 फीट लंबी पतंग भी है, जिस पर उकेरा गया गरबा डांस आने वाले दर्शकों को बरबस ही अपनी ओर खींचता है। उत्तरायण उत्सव के दौरान यहां बड़ी संख्या में सैलानी आते हैं। *

सुधा कार म्यूजियम हैदराबाद

ऑटोमोबाइल डिजाइनर के. सुधाकर द्वारा तेलंगाना के हैदराबाद में स्थापित यह म्यूजियम, दुनिया का पहला हैंडमेड कार म्यूजियम है। यह भारतीय नवाचार, रचनात्मकता और ऑटोमोबाइल के अनूठे संगम को दर्शाता है। सबसे खास बात है कि यहां प्रदर्शित कारें और बाइक, दैनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाली चीजों के रूपाकार में डिजाइन की गई हैं जैसे- कैमरा, पर्स, जूता, किताब, बर्गर, क्रिकेट बैट, लिपस्टिक, टेबल टेनिस बॉल आदि। सभी गाड़ियां वर्किंग कंडीशन में हैं लेकिन बिक्री के लिए नहीं हैं। यहां दुनिया की सबसे बड़ी तिपहिया साइकिल और सबसे छोटी डबल डेकर बस भी देखी जा सकती है, जिन्हें गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड्स में भी शामिल किया गया है। हर गाड़ी के साथ उसकी निर्माण प्रक्रिया, लागत, अधिकतम गति आदि की जानकारी भी दी गई है। यह म्यूजियम बच्चों-बड़ों सभी को पसंद आता है। *

{ अमेजिंग / रजनी अरोड़ा } स्पेशलः इंटरनेशनल म्यूजियम-डे, 18 मई

संग्रहालय यानी म्यूजियम ऐसी जगह होती है, जहां इतिहास, कला, संस्कृति, रक्षा या विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह और संरक्षण किया जाता है। इसके अलावा कई संग्रहालयों में यूनिक आइटम्स का संग्रह भी किया जाता है। अपने देश में स्थित कुछ अनोखे संग्रहालयों पर एक नजर।

देश के अनूठे म्यूजियम

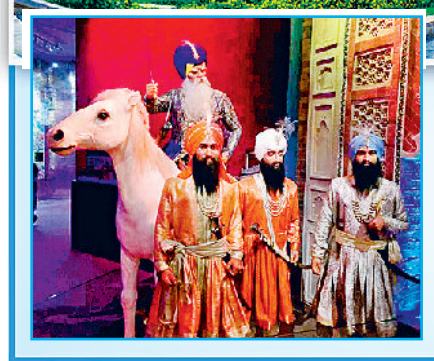

विरासत-ए-खालसा आनंदपुर साहेब

इस संग्रहालय की स्थापना पंजाब में वर्ष 2011 में की गई थी। यहां सिख गुरुओं के जीवन, खालसा पंथ की स्थापना, पंजाब के इतिहास, संस्कृति और धार्मिक संघर्षों को अत्याधुनिक मल्टीमीडिया तकनीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इसकी इमारत का अनोखा वास्तुशिल्प भी आकर्षण का केंद्र है। विशाल पेंटिंग्स, मल्टीमीडिया लाइट एंड साउंड शो, यहां आने वाले दर्शकों को ऐतिहासिक घटनाओं का जीवंत अनुभव कराते हैं। इस म्यूजियम की गिनती भारत के तकनीकी तौर पर एडवांस म्यूजियमों में की जाती है। *

नेवल एविएशन म्यूजियम गोवा

साल 1998 में गोवा में स्थापित इस म्यूजियम में कई विंटेज विमान और लड़ाकू विमानों में प्रयोग होने वाले हथियार प्रदर्शित किए गए हैं। साथ ही यहां आईएनएस विराट युद्धपोत का मॉडल भी रखा गया है। इस अनोखे म्यूजियम में एवियाफ्लिक्स थिएटर भी है, जहां पर्यटक नेवल एविएशन के बारे में रोचक जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं। भूख लगे तो यहां बने कॉकपिट कैफे में आराम से बैठकर खा-पी भी सकते हैं। *

आरबीआई मॉनेटरी म्यूजियम मुंबई

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा मुंबई में संचालित इस म्यूजियम की स्थापना वर्ष 2004 में की गई थी। यहां मुद्रा से जुड़ी डेढ़ हजार से ज्यादा वस्तुओं का संग्रह है। इस म्यूजियम में छठी सदी से आज तक के सिक्के और नोटों का अच्छा कलेक्शन है। पर्यटक यहां नोटों और सिक्कों के बनने का प्रोसेस भी जान सकते हैं। साथ ही समझ सकते हैं कि करेंसी में किस-किस तरह की सिक्योरिटी फीचर होते हैं। *

इंडियन म्यूजिक एक्सपीरियंस म्यूजियम बेंगलुरू

2018-19 में कर्नाटक के बेगलुरु में स्थापित यह म्यूजियम, भारत का पहला इंटरएक्टिव म्यूजिक म्यूजियम है। इस म्यूजियम की स्थापना का उद्देश्य भारतीय संगीत की हजारों वर्षों पुरानी परंपरा को आधुनिक तकनीक के साथ प्रस्तुत करना था। यहां भारतीय संगीत के इतिहास, शास्त्रीय संगीत, लोकसंगीत, सूफी संगीत, फिल्म संगीत और आधुनिक संगीत की यात्रा को डिजिटल डिस्प्ले, ऑडियो इंस्टालेशन और इंटरएक्टिव तकनीकों के माध्यम से समझाया जाता है। म्यूजियम में तबला, सितार, सरोद, वीणा जैसे वाद्ययंत्रों का भी प्रदर्शन किया गया है। दर्शक यहां हेडफोन, टच स्क्रीन और डिजिटल गैलरी के माध्यम से विभिन्न वाद्ययंत्रों को सुनने और स्वयं बजाने का अनुभव भी कर सकते हैं। *

ट्रिक आर्ट 3-डी म्यूजियम चेन्नई

भारत का पहला ट्रिक आर्ट 3-डी म्यूजियम की स्थापना तमिलनाडु के चेन्नई में कलाकार ए. पी. श्रीधर ने साल 2016 में की थी। यह म्यूजियम फ्रेंच आर्ट फॉर्म-ट्रॉम्प लोय या दृष्टि भ्रमकारी कला यानी (ऑप्टिकल इल्यूजन) और इंटरेक्टिव आर्ट के लिए मशहूर है। यहां की गैलरियों में दर्शकों को भ्रमित कर देने वाली 24 से अधिक इंटरएक्टिव 3-डी पेंटिंग्स प्रदर्शित की गई हैं। जो आने वाले दर्शकों को एक जादुई दुनिया का अहसास कराती हैं। इनके साथ खड़े होकर फोटो लेने पर ऐसा लगता है, मानो ये पेंटिंग्स जीवित हो गई हैं। यहां आने वाले दर्शक उस दृश्य का हिस्सा-सा बन जाते हैं और उनके साथ फोटो खिंचवाए बिना नहीं रहते। ट्रिक आर्ट म्यूजियम की तर्ज पर अब बेंगलुरू में क्लिक आर्ट म्यूजियम और मुंबई में पैराडॉक्स म्यूजियम भी बनाए गए हैं। *

ब्रेन म्यूजियम बेंगलुरू

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेज (निमहांस) द्वारा बेगलुरु में स्थापित यह भारत का एकमात्र और विश्व के गिने-चुने ब्रेन म्यूजियमों में से एक है। इस म्यूजियम में 400 से अधिक मानव मस्तिष्क और कई पशु-पक्षियों (जैसे- गाय, मुर्गी, चूहा, बंदर) के मस्तिष्क फॉर्मलीन केमिकल में संरक्षित करके प्रदर्शित किए गए हैं। जिन्हें पिछले 40 वर्षों में वैज्ञानिकों ने एकत्र किया है। इनके अलावा यहां फेफड़े, वोकल बॉक्स, आंतें और मानव कंकाल के नमूने भी हैं। शुरुआत में ये संग्रह मेडिकल छात्रों और शोध के लिए थे, लेकिन अब आम जनता के लिए भी खोले गए हैं। इसका उद्देश्य न्यूरोसाइंस की जानकारी देना, ब्रेन की संरचना, कार्य, विकास और कुछ बीमारियों (जैसे- अल्जाइमर, पार्किंसन, ब्रेन ट्यूमर) से जुड़ी भ्रांतिया दूर करने के साथ अंगदान के प्रति जागरूकता फैलाना है। यहां पर्यटक असली मानव मस्तिष्क को हाथ में लेकर भी देख सकते हैं, जो रोमांच से भर देता है। *

{ विशिष्ट पेड़ / वीना गौतम }

बहुपयोगी इमली का पेड़

बढ़ती लागत, घटती पैदावार और जल संकट के इस दौर में भारत के किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह ऐसी खेती का चुनाव करें, जो कम खर्च में स्थाई और भरोसेमंद आय दे सके। इस नजरिए से इमली का पेड़ एक अच्छा विकल्प है। लंबे जीवनकाल, कम देखभाल और सूखा सहन करने की इमली के पेड़ में अद्भुत क्षमता के कारण इसे एक बार लगाने के बाद सालों साल लगातार उत्पादन देता रहता है। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी इसकी स्थिर मांग बनी रहती है।

आसान है खेतीः खास बात यह है कि इसे खेत की मेढ़ों या बंजर भूमि पर भी उगाया जा सकता है, जो अतिरिक्त आय का स्रोत बन सकता है। भारत के सबसे उपयोगी और बहुउद्देशीय पेड़ों में से एक इमली के पेड़ का वैज्ञानिक नाम टैमरिंड्स इंडिका है। यह मूल रूप से अफ्रीका का पेड़ है, लेकिन प्राचीन काल से ही भारत में इसकी समृद्ध मौजूदगी रही है। दक्षिण भारत में विशेषकर कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, मध्य भारत में छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में तथा महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश के अलावा असम, बंगाल और बिहार में भी इमली के पेड़ बड़ी संख्या में पाए जाते हैं।

आर्थिक-पर्यावरणीय महत्ताः इमली सिर्फ किसानों की आर्थिक आय का ही मजबूत स्रोत नहीं बन सकता बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण पेड़ है। इमली का पेड़ 15 से 25 मीटर तक ऊंचा हो सकता है। यह दीर्घजीवी पेड़ है यानी बहुत आसानी से 100 से 200 सालों तक फलता है। इसका तना मजबूत, मोटा और खुरदुरा होता है। इसकी कैनोपी यानी इसका छत्र, घना और फैलावदार होता है। इसमें छोटी-छोटी कंपाउंड पत्तियां पाई जाती हैं। ये पत्तियां हल्की हरी और मुलायम होती हैं। इमली के पेड़ में छोटे पीले रंग के लाल धारियों के साथ फूल लगते हैं, ये अप्रैल से जून के महीने में लगते हैं और फिर लंबी भूरे रंग की फली जिसके अंदर खट्टा-मीठा गूदा होता है, इसके बीज कठोर और चमकीले होते हैं। इमली के पेड़ का मुख्यतः प्रजनन बीज द्वारा होता है। 25 से 35 डिग्री सेंटीग्रेड का तापमान इसके लिए आदर्श होता है और जिन इलाकों में सालाना 500 से लेकर 1500 मिलीमीटर तक वर्षा होती है, वहां इसे आराम से लगाया जा सकता है। यह मिट्टी का कटाव रोकता है। पशुओं के लिए छाया और चारा देता है। इमली का पेड़ कार्बन अवशोषण के लिहाज से भी महत्वपूर्ण माना जाता है और दीर्घकाल में यह खेती की उत्पादकता भी बढ़ाता है। हाल के सालों में इमली के फलों की मांग देश ही नहीं विदेश में भी काफी ज्यादा हुई है। किसानों के लिए इमली का पेड़ कम लागत में ज्यादा लाभ का शानदार जरिया है। इमली के गूदे का भारत में हर जगह विभिन्न तरह के खाए जाने वाले व्यंजनों में उपयोग किया जाता है, विशेषकर सांभर, चटनी, कढ़ी और कई तरह के पेय पदार्थ में इमली का उपयोग होता है। फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री में इसकी अच्छी खासी मांग है। टार्टरिक एसिड, पॉलिश और कई किस्म की दवाइयां इसके इस्तेमाल से बनाई जाती हैं। *

{ सक्सेस फंडा / नेहा जैन }

अगर आप जीवन में कुछ बड़ा, कुछ नया पाने की तमन्ना रखते हैं, तो आपको अपने काम करने के तरीके में भी कुछ नयापन लाना होगा।

बदलें पुरानी वर्किंग स्टाइल
लिखें सक्सेस की नई कहानी

सफलता संसाधनों की अधिकता से नहीं, बल्कि सोच की स्पष्टता और काम करने के स्मार्ट तरीकों से मिलती है। अगर सूझबूझ और स्मार्ट तरीके से काम किया जाए तो आपको हैवी फंडिंग या भारी-भरकम टीम की जरूरत नहीं होती है। आपके काम करने का तरीका ही वह असली फंडा है, जो आपको भीड़ से अलग खड़ा करेगा और सफलता के मुकाम तक पहुंचाएगा। इस बारे में जेसन फ्राइड और डेविड हैनमेयर हैनसन की पुस्तक 'रीवर्क' में डिटेल में बताया गया है।

लोगों पर नहीं काम पर करें फोकसः जब भी आप कोई नया काम करने की सोचते हैं, लोग तरह-तरह की बातें करते हैं और कई बार आपको हतोत्साहित करते हैं। ऐसे में आपको अपनी मेहनत और कौशल पर यकीन करना चाहिए। दूसरों के अनुभवों से डरने के बजाय अपने प्रयोग करने चाहिए।

प्लानिंग से ज्यादा जरूरी एक्शनः अत्यधिक योजनाएं बनाने में समय नष्ट न करें। बस शिद्दत से काम शुरू करें, बाकी चीजें समय के साथ स्पष्ट होती चली जाएंगी। यह समझना होगा कि सिर्फ बातें करने से कुछ नहीं होगा। जो आप वास्तव में बना रहे हैं, उस पर ध्यान केंद्रित करें।

कम में ज्यादा खोजेंः आप कुछ भी करें, बाधाएं तो आएंगी ही। 'मेरे पास पैसे नहीं हैं' या 'मेरी टीम छोटी है' जैसे बहाने बनाना छोड़ें। कम संसाधन आपको समाधान खोजने के लिए मजबूर करते हैं। छोटे बजट में आप फालतू खर्चों से बचते हैं और केवल वही करते हैं, जो सबसे ज्यादा जरूरी है। याद रखिए सीमाएं ही नवाचार की जननी हैं।

अपनी अलग पहचान बनाएंः यदि आप दूसरों की नकल करेंगे, तो भीड़ में खो जाएंगे। अपनी सर्विस या प्रोडक्ट को पर्सनल टच दें। यदि आप काम में अपने अनोखे विचार डालते हैं, तो आपका कॉम्पिटिशन कम हो जाता है। लोग आपकी सर्विस इसलिए लेंगे क्योंकि वह औरों से अलग है।

गलतियों से न डरेंः असफलता अंत नहीं है। असफल होना आपको सिखाता है कि क्या काम नहीं करना है। अपनी गलतियों को सुधारें, गलतियों से सीखें और आगे बढ़ें। याद रखें, काम करने का असली तरीका किताबी नहीं, बल्कि व्यावहारिक अनुभव होता है।

वर्कोहलिक बनने से बचें: बिना आराम किए दिन में 15-18 घंटे काम करना मेहनत नहीं, बल्कि कुप्रबंधन है। इससे आपकी क्रिएटिविटी और प्रोडक्टिविटी पर बुरा असर पड़ सकता है। असली कुशलता कम समय में गुणवत्तापूर्ण परिणाम देने में है। कम समय में स्मार्ट तरीके से काम करना ही असली कुशलता है।

'ना' कहना भी जरूरीः एक साथ बहुत सारे काम करने की कोशिश में हम अकसर औसत दर्जे का परिणाम देते हैं। फालतू सुझावों और ध्यान भटकाने वाली चीजों को 'ना' कहें ताकि आप अपनी कोर स्ट्रेंथ पर ध्यान केंद्रित कर सकें। 'ना' कहना आपको अपने मुख्य लक्ष्य पर केंद्रित रखता है।

अकेलेपन का समय निकालेंः रचनात्मक काम के लिए गहरी एकाग्रता चाहिए। दिन का कोई एक हिस्सा 'साइलेंस जोन' के लिए रखें, जहां कोई आपको डिस्टर्ब न कर सके। यही वह समय है जब आप अपना 'डीप वर्क' पूरा कर पाएंगे। *

हाल में ही सोनी एंटरटेनमेंट चैनल और सोनी लिव पर गेम रियलिटी शो 'तुम हो ना' शुरू हुआ है। बतौर होस्ट इसके जरिए राजीव खंडेलवाल ने लंबे अंतराल के बाद टीवी पर वापसी की है। इस शो को एक्सेप्ट करने की क्या वजह रही? लंबे समय तक टीवी से दूर क्यों रहे? शो और करियर से जुड़े कुछ और सवाल राजीव खंडेलवाल से।

मैं वही काम करना चाहता हूं जो मुझे खुशी दे: राजीव खंडेलवाल

{ खास मुलाकात / आरती सक्सेना }

अभिनेता राजीव खंडेलवाल ने सबसे पहले एकता कपूर के टीवी डेली सोप 'कहीं तो होगा' से प्रसिद्धि पाई। फिर रियलिटी शो 'सच का सामना' के दो सीजन के दौरान उन्हें खूब लोकप्रियता मिली। लंबे गैप के बाद राजीव एक बार फिर महिलाओं के सम्मान और खुशी पर आधारित गेम-रियलिटी शो 'तुम हो ना' होस्ट करते नजर आ रहे हैं। यह शो खासतौर पर उन महिलाओं को लेकर बनाया गया है, जो अपने घर की बॉस हैं और मुश्किलों से भरी जिंदगी जीकर अपना मुकाम बना चुकी हैं। हाल ही में हुई लंबी बातचीत में राजीव खंडेलवाल ने इस शो से जुड़े सवालों के बेबाक अंदाज में जवाब दिए। पेश है इस बातचीत के प्रमुख अंश-

'तुम हो ना' रियलिटी शो में क्या खास लगा, जिस वजह से आपने इसे होस्ट करना एक्सेप्ट किया?

खास वजह यही है कि यह शो महिलाओं पर केंद्रित है। 'तुम हो ना' महिलाओं का शो है, जिसमें कॉमन महिलाएं आती हैं, और अपने दिल की बातें, अपना संघर्ष अपनी खुशी और गम हमारे साथ शेयर करती हैं। हम उनको गेम्स खिलाते हैं, उनका मनोरंजन करते हैं। इस शो में कई मां-बहनें अलग-अलग शहरों से अपने अनुभव लेकर आती हैं और अपना अनुभव हमारे साथ साझा करती हैं।

इस शो के लिए क्या आपने अपने ड्रेसिंग स्टाइल पर भी खास ध्यान दिया है?

हां, मेरी स्टाइलिस्ट ने कहा कि इस शो के लिए अगर हम ड्रेसिंग में महिला की ज्वेलरी का इस्तेमाल करेंगे तो बहुत अच्छा लगेगा। मैंने अपने ड्रेस में महिलाओं की ज्वेलरी जैसे बिंदी, पायल, मांग टीका, झुमके आदि का इस्तेमाल किया है। इसके अलावा बांदनी चुन्नी का भी उपयोग किया है। पहले मैं थोड़ा असमंजस में था, लेकिन बाद में जब लोगों ने तारीफ की तो मुझे लगा कि यह वाकई स्टाइलिश लग रहा है। सच कहूं तो इस शो में इस तरह की ड्रेस पहनने का पर्पस मेरी ओर से महिलाओं को खास अंदाज में ट्रिब्यूट देना है।

'तुम हो ना' से पहले आपने काफी लंबा गैप लिया। इतना लंबा ब्रेक लेने के पीछे क्या खास वजह रही?

मनपसंद रोल नहीं मिल रहा था। एक ही तरह के रोल ऑफर हो रहे थे, जो तीन-चार साल तक चलने वाले डेली सोप के थे। मैं इतने लंबे समय वाले सीरियल नहीं करना चाहता था। मैंने कभी भी काम के लिए 'ना' नहीं कहा, लेकिन अच्छा काम न होने की वजह से मुझे गैप लेना पड़ा। पैसों की ऐसी भी किल्लत नहीं थी कि मुझे अनाप-शनाप काम करना पड़े। मैं वही काम करना चाहता हूं जो मुझे खुशी दे और जिसमें मुझे देखकर दर्शक खुश हो। सोनी का यह शो जब ऑफर हुआ, तो मुझे इसका कॉन्सेप्ट बहुत यूनीक और अच्छा लगा, इसलिए मैंने यह शो एक्सेप्ट कर लिया।

शो 'तुम हो ना' में एक कंटेस्टेंट से बात करते हुए राजीव खंडेलवाल

'सच का सामना' और 'तुम हो ना', दोनों रियलिटी शोज में आपको मुख्य तौर पर क्या फर्क नजर आता है?

दोनों ही शोज रियलिटी से जुड़े हैं। दोनों में ही आम लोग पार्टिसिपेट करते हैं। फर्क यह है कि 'सच का सामना' में आम लोगों ने अपनी जिंदगी के कड़वे-सच्चे अनुभवों के बारे में बताया, जबकि 'तुम हो ना' शो में उन आम महिलाओं की कहानी है, जिन्होंने अपना जीवन अपने परिवार को समर्पित करके परिवार की स्टार बनीं। वह घर की मांएं, बेटियां और बहनें हैं, जिनकी मर्जी के बगैर घर में कुछ नहीं होता। 'सच का सामना' को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। रिलेटेबल और अलग हटके कॉन्सेप्ट होने के कारण 'तुम हो ना' को भी दर्शक खूब पसंद कर रहे हैं।

आपने कुछ समय पूर्व एक वेब सीरीज भी की 'अमर विश्वास', जो कोर्ट रूम ड्रामा पर केंद्रित है। क्या यह सच है कि अब आपको टीवी डेली सोप से ज्यादा वेब सीरीज में काम करना पसंद है?

नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। मैं एक एक्टर हूं और मुझे जहां अच्छा रोल मिलेगा, मैं करना चाहूंगा, फिर चाहे वह फिल्म हो, टीवी हो, वेब सीरीज या थिएटर ही क्यों ना हो। मैं वह सब काम करूंगा, जिसमें मेरी दिलचस्पी है, जैसे कि थिएटर करने में मुझे सबसे ज्यादा मजा आता है। क्योंकि वहां पर लाइव ऑडियंस मिलती है।

आपने फिल्म, टीवी और वेब सीरीज के अलावा थिएटर भी किया है?

हां, मैंने एक थिएटर किया था 'कोर्ट मार्शल' जो जी-टीवी के लिए था। इसमें मैंने वकील की भूमिका निभाई थी। लाइव ऑडियंस के सामने आधा-आधा घंटे के दो भाग में मेरा परफॉर्मेंस था। लाइव ऑडियंस के अलावा एनएसडी के थिएटर कलाकारों ने जब मेरी एक्टिंग की तारीफ की तो मुझे बहुत खुशी और संतुष्टि मिली। मेरा मानना है कि थिएटर में किया गया अभिनय सबसे मुश्किल होता है, बावजूद इसके थिएटर के कलाकारों को कोई अवार्ड नहीं मिलता, इस बात का मुझे दुःख है। *

घर की महिलाएं होती हैं रियल स्टार

'तुम हो ना' महिलाओं पर केंद्रित शो है, जिसे राजीव होस्ट कर रहे हैं। उनकी पर्सनल लाईफ में महिलाओं की क्या भूमिका रही है, इस बारे में पूछने पर वह बताते हैं, 'मेरी जिंदगी में बचपन से लेकर आज तक महिलाओं का प्यार मां, बहन और पत्नी के रूप में हमेशा रहा है। मेरे पिता मिलिट्री में थे इसलिए मैंने अपनी मां के साथ बहुत वक्त बिताया है। आज वह नहीं हैं मेरे साथ लेकिन उनका बहुत बड़ा योगदान मेरे जीवन में है। अच्छे संस्कार और अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा और सीख मुझे मेरी मां से मिली। महिलाओं के सम्मान में मुझे यही कहना है कि जो चमकते हैं, सिर्फ वही स्टार नहीं होते! घर की महिला सदस्य रियल स्टार होती हैं, जो हमें बचपन से सपोर्ट देती हैं, एक अच्छा इंसान बनाती हैं, हमें आगे बढ़ने का हौसला देती हैं।